Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष-38 अंक- 28
कल्पादि सम्वत् 1972949114

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 08 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2014 तक
आश्विन शुक्ल पूर्णिमा से कार्तिक कृष्ण षष्ठी सम्वत् 2071 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

हमें खुद से लड़ना..... पृष्ठ- 3

आयुर्वेद के कुछ... पृष्ठ- 4

गाय के दूध, घी का.... पृष्ठ- 5

Symbol of Divine... पृष्ठ- 9

देख तमाशा कुर्सी.. पृष्ठ- 12

- संस्कार विहीन शिक्षा बढ़ते अपराध
- मर्यादा पुरुषोत्तम राम की ऐतिहासिकता
- अस्तित्व बचाने के लिए संघर्षरत बांग्लादेशी हिन्दू
- भारत ने रचा 'मंगल' इतिहास
- एक ग्रंथ जिसने भारत-पाक को आणविक युद्ध की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया!

पाकिस्तान ने २६ भारतीय मछुआरों को हिरासत में लिया, हिन्दू महासभा ने विरोध किया

• संवाददाता •

पाकिस्तानी अधिकारियों ने पाकिस्तानी जलसीमा में कथित रूप से प्रवेश करने के सिलसिले में कम से कम २६ भारतीय मछुआरों को हिरासत में ले लिया। मेरिटाइम सिक्युरिटी एजेंसी के अधिकारियों ने इन मछुआरों को गिरफ्तार किया और उनकी नौकाएं भी जब्त कर लीं। अधिकारियों ने बताया कि भारतीय मछुआरों को जब गिरफ्तार किया गया तो वे पाकिस्तानी जलसीमा में १० किलोमीटर अंदर थे। यह पहला मौका नहीं है जब इस तरह की घटना हुई। पाकिस्तानी तटरक्षक अकसर भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार करते हैं और उनकी नौकाएं जब्त कर लेते हैं। शेष पृष्ठ 11 पर

अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत बनेगा आत्मनिर्भर

• संवाददाता •

विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र के निदेशक एम चंद्र दातन ने कहा कि जीएसएलवी मार्स ३ का प्रायोगिक अभियान सफल होने पर भारी संचार उपग्रह प्रक्षेपित करने के लिए भारत को दूसरे देशों पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं होगी। दातन ने संवाददाताओं से कहा जीएसएलवी मार्स ३ का प्रक्षेपण नवंबर के पहले सप्ताह में निर्धारित है और इससे चार टन श्रेणी का संचार उपग्रह भेजा जायेगा और इससे भारत को इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करने में मदद मिलेगी। दातन मंगल अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले वीएसएससी के वैज्ञानिकों के समूह के सम्मान में प्रेस क्लब में आयोजित समारोह हिस्सा ले रहे थे। उन्होंने कहा कि देश फेंच गुयाना से भारी संचार उपग्रह भेजता रहा है और एक बार प्रयोगिक मिशन सफल होने के बाद उनपर निर्भर रहने की जरूरत नहीं होगी। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारतीय वैज्ञानिकों की उपलब्धियों पर संतोष व्यक्त करते हुए आशा प्रकट किया है कि अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत आत्मनिर्भर बनेगा। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा है कि भारत के वैज्ञानिक दुनिया में सर्वश्रेष्ठ हैं। भारतीय वैज्ञानिकों ने पूरी दुनिया में डंका बजाया है। अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि देशों में भी भारतीय वैज्ञानिकों ने उन देशों का झण्डा बुलंद किया हैं। हमें विश्वास है कि भारत का झण्डा बुलन्द होगा।

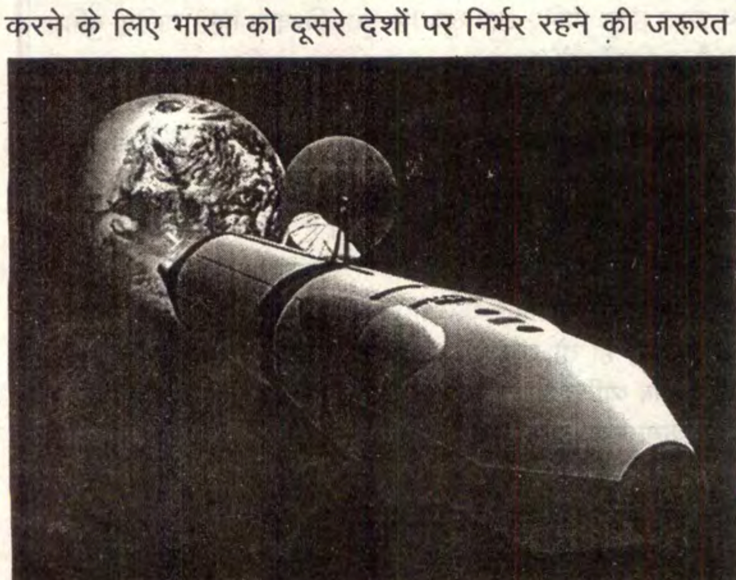

एक अक्षर से तीन उपदेश

एक बार देवता, मनुष्य और असुर– ये तीनों ही ब्रह्माजी के पास ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्याध्ययन करने गये। कुछ काल बीत जाने पर उन्होंने उनसे उपदेश (समावर्तन) ग्रहण करने की इच्छा प्रकट की। सबसे प्रथम देवताओं ने कहा–'प्रभो! हमें उपदेश कीजिये।' प्रजापति ने एक ही अक्षर कह दिया 'द'। देवताओं ने कहा हम समझ गये। हमारे स्वर्गादि लोकों में भोगों की भरमार है। उन्हीं में लिप्त होकर हम अन्त में स्वर्ग से गिर जाते हैं, अतएव आप हमें 'द' से 'दमन' अर्थात् इन्द्रिय–संयम का उपदेश कर रहे हैं।' तब प्रजापति ब्रह्माने कहा, 'ठीक है, तुम समझ गये।'

फिर मनुष्यों ने प्रजापति से कहा– 'आप हमें उपदेश कीजिये।' प्रजापति उनसे भी 'द' इस एक अक्षर को ही कहा और पूछा कि 'क्या तुम समझ गये? मनुष्यों ने कहा–'जी, समझ गये, आपने हमें दान करने का उपदेश दिया है; क्योंकि हम लोग जन्म भर संग्रह करने की ही लिप्सा में लगे रहते हैं, अतएव हमारा दान में ही कल्याण है।' तब प्रजापति–ने कहा –'ठीक है, मेरे कथन का यही अभिप्राय था'।

अब असुरों ने उनके पास जाकर उपदेश की प्रार्थना की। प्रजापति इन्हें भी 'द' अक्षर का ही उपदेश किया। असुरों ने सोचा, 'हमलोग स्वभाव से ही हिंसक हैं, क्रोध और हिंसा हमारा नित्य का सहज व्यापार है। अतएव निःसंदेह हमारे कल्याण का मार्ग एकमात्र 'दया' ही है। प्रजापति ने हमें उसी का उपदेश किया है, क्योंकि दया से ही हम इन दुष्कर्मों को छोड़कर पाप–ताप से मुक्त हो सकते हैं।' यों विचार कर वे जब चलने को तैयार हुए, तब प्रजापति ने उनसे पूछा 'क्या तुम समझ गये?' असुरों ने कहा– 'प्रभो! आपने हमें प्राणिमात्र पर दया करने का उपदेश दिया है।' प्रजापति ने कहा, 'ठीक है, तुम समझ गये।' प्रजापति के अनुशासन की प्रतिध्वनि आज भी मेघगर्जना में हमें 'द,द,द' के रूप में अनुदित होती सुनायी पड़ती है। अर्थात् भोगप्रधान देवताओं! इन्द्रियों का दमन करो। संग्रहप्रधान मनुष्यों! भोगसामग्री का दान करो और क्रोधप्रधान असुरों! जीवमात्र पर दया करो। इसमें हमें दम, दान और दया–इन तीनों को सीखना तथा अपनाना चाहिये।

इस्लाम का विश्व के अन्य सभी धर्मों के प्रति घृणास्पद रूख

- तुम उनसे लड़ो यहाँ तक कि कितना शेष न रह जाए और दीन (धर्म) अल्लाह के लिए हो जाए। (कुरान २:१६३, २:३०)
- उनसे युद्ध करो यहाँ तक कि कितना शेष न रह जाए और दीन (धर्म) पूरा का पूरा अल्लाह के लिए हो जाए। (८:३६, पृ० १५२)
- भेजा ताकि उसे तमाम दीन (धर्म) पर प्रभावी कर दे। चाहे मुशरिकों (मूर्तिपूजकों) को बुरा लगे। (६:३३, पृ. १६०)
- वही है जिसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा ताकि उसे पूरे के पूरे धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे यद्यपि बहुदेव–वादियों को अप्रिय लगे। (६१.६., पृ. ५०७)

सभी आयतें 'पवित्र कुरआन'–मौलाना मुहम्मद फारुख खां और डा. मुहम्मद अहमद, प्रकाशक मधुर सन्देश संगम, दिल्ली, २००५ से ली गई हैं। **डा. कृष्णा वल्लभ पालीवाल**

"सत्ता की अभिलाषा"

सत्ता की अभिलाषा में हो रही राजनीतियों की दौड़ भारी
चाह है सब की बस मिल जाए हमे सत्ता की चाबी
हो रही सत्ता के लिए कैसी मारा–मारी
दल–बदलुओं की तो बात ही निराली।
सत्ता की लालसा तो सब करते हैं
वादे तो सत्ता के लिए सब करते हैं
परन्तु सत्ता के मद्यहोश में सब कुछ भुला दिया करते हैं
बिरला ही सरदार पटेल जैसे होते हैं।

पीयूष अरोड़ा

साप्ताहिक राशिफल

मेष : वाद, विवाद, न्याय आदि में सफलता प्राप्त होगी। बीता हुआ समय वापस नहीं आता है, इसलिए अफसोस करने से बेहतर होगा, सही तरह से कार्य करना। शिथिलता के पश्चात ही कार्य पूरा होगा।

वृष : इस सप्ताह नये लोगों की तरक्की में बाधायें आने की सम्भावना है। कार्यक्षेत्र में उतार–चढ़ाव की स्थिति बनी रहने के कारण मन में उदासीनता के भाव उत्पन्न हो सकते हैं। आप किसी की आलोचना का शिकार हो सकते हैं, अतः सावधानी पूर्वक कार्य करें।

मिथुन : इस सप्ताह निजी कार्यो में किसी भी प्रकार लापरवाही कदापि न करें। किसी के साथ किये गये वादे को पूरा करने में बाधायें उत्पन्न होंगी। सरकारी कर्मचारियों को किसी भी प्रकार का अतिरिक्त लाभ मिल सकता है।

कर्क : इस सप्ताह आपकी कुछ समस्यायें तत्काल हल हो सकती हैं। किन्तु समय का विशेष ध्यान देना पड़ेगा। मान–सम्मान, प्रतिष्ठा आदि में वृद्धि होने के आसार है। रोजी व रोजगार में तरक्की के नये अवसर प्राप्त होंगे।

सिंह : इस सप्ताह साहस व धैर्य पूर्वक अपनी क्षमता का भरपूर उपयोग करने से आप सफलता के नजदीक आयेंगे। कार्य, लक्ष्य और अपनी भूमिका का सफलता पूर्वक आंकलन करें। कार्य स्थल पर विरोधाभास की स्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं।

कन्या : इस सप्ताह आपके कुछ सपने साकार होंगे। कार्यों में आखिरी क्षण सफलता प्राप्त होगी जिससे आत्म–विश्वास में वृद्धि होगी। आदर्शवादी और साकारात्मक विचारधारा आपकी सफलता में काम आयेंगी।

तुला : इस सप्ताह व्यवसाय व कार्यक्षेत्र में शक्ति व वर्चस्व की स्थिति कायम होगी। निराशा दूर होगी तथा नये तरीकों से कार्यों में प्रगति होगी। शारीरिक समस्यायें घेरे रह सकती हैं। आफिस के कार्यों के लेकर अधीरता की स्थिति से गुजरेंगे।

वृश्चिक : इस सप्ताह कुछ लोगों को कार्य व व्यवसाय में महत्वपूर्ण फैसले लेने पड़ सकते हैं, जो आपके हित में साबित होंगे। आर्थिक मामलों में सूझबूझ से लिये गये निर्णय के फलस्वरूप अच्छे परिणाम मिल सकते हैं।

धनु : इस सप्ताह जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन के संकेत नजर आ रहे हैं। घर, परिवार व आफिस में संशय की स्थिति बनी रहेगी जिससे मन बेचैन रह सकता है। लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करें, समय–समय पर अधीरता की स्थिति बनेगी और हानि भी उठानी पड़ सकती है।

मकर : इस सप्ताह आपको–अपने विचारों में स्वतन्त्रता लाने की आवश्यकता है। कुछ मुद्दों पर परिस्थितियों के अनुसार समझौतावादी रवैया अपनायें। अहंकार की भावना को त्यागकर अपने लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करें।

कुम्भ : घटना व परिघटना जीवन का चक्र हैं। प्रत्येक घटना जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ जाती है। गुजरा हुआ कल बार–बार तंग कर सकता है। इससे छुटकारा पाने के लिए धर्म की शरण लेना हितकर रहेगा। आफिस के पुराने शत्रु पुनः सक्रिय हो सकते हैं।

मीन : इस सप्ताह नयी योजनाओं को लेकर मन असमंजस की स्थिति में रह सकता है। इस समय तत्काल निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाने की जरूरत है। आपके व्यक्तित्व के कुछ नकारात्मक पहलू भी लोगों के सामने आ सकते हैं। अतः सोंच–समझकर कार्य करें। **पं० दीनानाथ तिवारी**

अनमोल वचन

1. बुरे वक्त का एक लाभ भी है– जैसे ही बुरा वक्त आता है, स्वार्थी दोस्त साथ छोड़कर चलते बनते हैं, उनसे सदा के लिए छुटकारा मिल जाता है।
2. इन्सान अपना चेहरा तो खूब संवारता है जिस पर लोगों की नजर होती है, लेकिन अपना दिल नहीं संवारता जिस पर परमात्मा की नजर होती है।
3. जिन्दगी जीने का मकसद खास होना चाहिए और खुद पर दृढ़–विश्वास होना चाहिए, दुनिया में खुशियों की कमी नही है, खुशियों को मनाने का अन्दाज होना चाहिए। भलाई का अन्त भला होता है।
4. शरीर का केवल एक अंग 'दिल' ही ऐसा है जो जीवनभर बिना आराम किए काम करता है, इसे हमेशा खुश रखें, चाहे अपना हो गया अपनों का।
5. बुद्धिमान लोगों की प्रशंसा होती है, धनवान लोगों से ईर्ष्या होती है, बलशाली लोगों से डरते हैं, लेकिन विश्वास केवल चरित्रवान व्यक्तियों पर ही किया जाता है।
6. रास्ता खूबसूरत हो तो उस पर चलने से पहले यह भी जान लो कि वह किस तरफ जाता है, लेकिन लक्ष्य खूबसूरत (पवित्र) हो तो रास्ता जैसा भी हो, उसकी परवाह न करो।
7. मन की पवित्रता तभी आती है जब व्यक्ति अपना अहंकार छोड़कर दूसरों के लिए जीने लगता है। दूसरों की मदद के लिए किया गया त्याग व्यक्ति को निर्मल बनाता है। कर भला हो भला, अन्त भले का भला।
8. सुख–शान्ति चाहते हो तो दूसरों में दोष देखने और उनकी निन्दा करने की आदत छोड़कर, दूसरों को सुख–शांति देने की आदत अपनाओ।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 08 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2014 तक

अध्यक्षीय

भारत ने रचा 'मंगल' इतिहास

२४ सितम्बर २०१४ इतिहास में दर्ज हो गया है। इस दिन भारत ने एक मंगल इतिहास रचा।बुधवार सुबह भारत ने अंतरिक्ष और मंगल मिशन के इतिहास में अपना नाम सुनहरे अक्षरों में दर्ज करा लिया। यह सुब्ह खास थी क्योंकि मंगलवार के बाद बुधवार को भारत ने उस ग्रह पर कामयाबी पाई जिसे लाल ग्रह के रूप में जाना जाता है। सुबह ७ बज कर १७ मिनट पर ४४० न्यूटन लिक्विड एपोजी मोटर यान को मंगल की कक्षा में प्रविष्ट कराने वाले थ्रस्टर्स के साथ तेजी से सक्रिय हुई। खुशियों का पल साकार हो उठा था। करोड़ों घंटों की मेहनत सार्थक हो गई। इस धरती के पार जो दुनिया है, वह कैसी है, सौरमंडल में पृथ्वी के जो अन्य बंधु–बांधव हैं, उनमें भी क्या जीवन स्पंदित होता है, क्या जीवन की तरलता की कोई संभावना उनमें तलाशी जा सकती है। हमारे वेद–पुराणों में, कथाओं में ग्रह–नक्षत्र भूमिकाओं के साथ उपस्थित होते हैं, लेकिन समूचे ब्रहांड में उ॰की क्या भूमिका है। क्या कभी धरती पर रहने वाला मानव किसी अन्य ग्रह में बसने वाले अब तक कल्पित प्राणी से साक्षात्कार कर सकेगा। ऐसे तमाम प्रश्न मानव मस्तिष्क में कुलबुलाते रहते हैं। फिलहाल जिज्ञासाओं की अंतहीन कड़ी में एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है भारत ने। मंगल ग्रह की कक्षा में भारत ने अपना पहला मंगल यान स्थापित करने में सफलता हासिल की है। खास बात यह है कि भारत विश्व का अकेला ऐसा देश है, जिसे अपने प्रथम प्रयास में ही यह विशेष सफलता हासिल हुई है। अब तक अमरीका, रूस और यूरोपीय संघ ने मंगल अभियान में सफलता प्राप्त की है। भारत इस संघ में चौथा देश बन गया है, यूं एशिया का वह पहला देश है जिसने मंगल अभियान में सफलता प्राप्त की। विश्व के अन्य अभियानों से अलग हमारी खासियत यह भी है कि यह मात्र ४५० करोड़ रुपए के खर्च पर संचालित किया गया और विश्व में सबसे सस्ता मंगल अभियान बन गया। इसी हफ्ते नासा से जो मंगल अभियान संचालित हुआ, उसकी लागत इससे दस गुना है। अर्थात भारतीयों ने यह साबित कर दिया कि वे सफल वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ–साथ वैज्ञानिक अर्थशास्त्र में भी सर्वश्रेष्ठ हैं। भारत की इस ऐतिहासिक सफलता पर हरेक देशवासी का प्रसन्न होना स्वाभाविक है। जो लोग मंगल को एक ग्रह के नाम से अधिक नहीं पहचानते और जो इसका खगोलीय महत्व समझते हैं। ऐसे हर वर्ग के लोग इस अभियान के सफल होने पर गर्व महसूस कर रहे हैं। निस्संदेह इसका सारा श्रेय हमारी अंतरिक्ष अनुसंधान एजेंसी इसरो को जाता है, जिसके वैज्ञानिकों ने दिन–रात के अथक परिश्रम से एक असंभव लगने वाले कार्य को संभव बना दिया। विज्ञान के बारे में एक नया नजरिया विकसित करने में मदद की कि यह जटिल नहीं है, ठीक से समझाया जाए तो आसान ही है। अब इस मंगलयान मिशन की शानदार कामयाबी के बाद संभावनाएं और उम्मीदें भी बढ़ी हैं। वैज्ञानिकों के मुताबिक भारत के कम खर्च वाले मंगलयान ने दुनिया को एक नया रास्ता दिखाया है। जानकारों के मुताबिक मंगल की कक्षा में स्थापित हो जाने के बाद मंगलयान इसके वायुमंडलए खनिजों और संरचना का अध्ययन करेगा। मंगलयान के साथ पांच उपकरण भेजे गए हैं जो वहां से जांच कर संकेत भेजेंगे। इन उपकरणों का कुल भार १५ किलो है। अब ये उपकरण धीरे–धीरे मंगल की एक–एक रहस्यों से पर्दा हटाएंगे। इस मिशन से मंगल ग्रह के बारे में ढेरों जानकारियां हासिल होने की उम्मीद है। मुमकिन है कि हमें पता चल पाएगा कि क्या मंगल पर मीथेन गैस का वजूद है। लाल ग्रह के गर्भ में खनिज छिपे होने, बैक्टीरिया का वास होने के रहस्यों के अलावा और उस बड़े रहस्य से भी पर्दा उठ सकता है कि क्या मंगल ग्रह पर जिंदगी की संभावनाएं है। वैज्ञानिक जानकारों का मानना है कि भारत का सफल हुआ मंगलयान अभियान पूर्व में लाल ग्रह को भेजे गए अन्य देशों के अभियानों से मिली जानकारियों में अपनी ओर से बड़ा योगदान करेगा और साथ ही देश के लिए अंतरिक्ष के क्षेत्र में व्यावसायिक लाभ के बडे" रास्ते भी खोलेगा। भारत इस बहाने दुनिया में यह संदेश दे सकेगा कि उसके पास सस्ती लागत और विश्वसनीय गुणवत्ता वाला ऐसा अंतरिक्ष उद्योग मौजूद है जो कम संसाधनों में अंतरिक्ष के बड़े–बड़े सपनों को साकार कर पाने में सक्षम है।

राष्ट्रीय उद्बोधन

चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

हमें खुद से लड़ना होगा

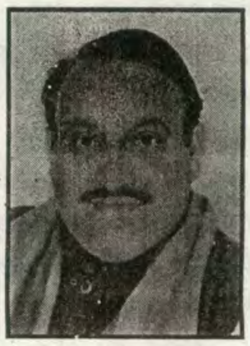

देश की अर्थव्यवस्था की बेहतरी और बड़े पैमाने पर रोजगार–सृजन के लिए निर्माण क्षेत्र को मजबूत करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। निर्यात की तुलना में आयात की मात्रा बहुत अधिक होने से व्यापार संतुलन हमारे पक्ष में नहीं है। विदेशी पूंजी का निवेश भी संतोषजनक नहीं है, समुचित संस्थागत आधार के अभाव में निर्माण की नयी संभावनाओं को वास्तविकता में बदलना तो दूर, निर्यात की वर्तमान क्षमता का भी सही दोहन नहीं हो पा रहा है। इस स्थिति में बिना किसी बड़ी और भरोसेमंद पहल के गरीबी, बेरोजगारी, महंगाई जैसी समस्याओं का मुकाबला कर पाना असंभव है। इसके लिए सरकारी संस्थाओं, नीतियों, नियमों और योजनाओं के परस्पर समायोजन के साथ दूरदर्शी राजनीतिक नेतृत्व की आवश्यकता है। ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा घोषित मेक इन इंडिया की महत्वाकांक्षी पहल से भारत के आर्थिक विकास की नयी उम्मीदें जगी हैं। कुछ दशकों में ही चीन जिस गति से आर्थिक महाशक्ति बन कर उभरा है, उसके आधार में निर्माण क्षेत्र का विकास ही है। यह मात्र संयोग नहीं है कि नरेंद्र मोदी की मेक इन इंडिया घोषणा के साथ ही चीन ने मेड इन चाइना अभियान की शुरूआत कर दी है। चीन की यह त्वरित प्रतिक्रिया चुनौतियों का सीधे सामना करने की उसकी कार्यसंस्कृति का परिचायक है। एशिया में एक और विशाल निर्माण–क्षेत्र का विकास उसके प्रभाव और विस्तार पर नकारात्मक असर डाल सकता है। स्वयं भारत का चीन के साथ व्यापार घाटा ३६ अरब डॉलर है। भारत अपने निर्माण में तेजी लाकर इस घाटे को कम कर सकता है। चीनी पहल का जोर उच्च श्रेणी के तकनीक के आयात और शोध के स्तर को बढ़ाने पर है। इसके लिए करों में बड़े पैमाने पर छूट का भी प्रस्ताव है। जो २०१३ में चीन के कुल नकद आमद का लगभग आठ फीसदी तक हो सकता है। मेड इन चाइना की एक विशेषता उसके विकास के आधार लघु और मध्यम श्रेणी के उद्यमों की तकनीकी गुणवत्ता को बढ़ाना है। बहरहाल, मोदी के मेक इन इंडिया को असली चुनौती जिनपिंग के मेड इन चाइना से नहीं है। भारत में संरचनात्मक परिवर्तन और विकास की परियोजना में सबसे बड़ा रोड़ा हमारे काम–काज और प्रबंधन का रवैया है। मोदी की योजना पर चीन समेत पूर्व एशिया के देशों में हुए त्वरित आर्थिक विकास के मॉडल का बड़ा असर है और हम आगे भी उन देशों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। लेकिन उससे पहले हमें अपनी मूलभूत कमियों को दूर करना होगा। भारत को अपनी जुगाड़ परंपरा से ऊपर उठना होगा। भारतीय मनोवृत्ति ही देश की असफलता का प्रमुख कारण है। वास्तव में अपने ही बोझ से दबा भारत वह हासिल करने में असफल रहा है, जो वह हासिल कर सकता है और जो उसे हासिल करना चाहिए। शिथिल मानसिकता के साथ–साथ भ्रष्टाचार हमारे सार्वजनिक जीवन का कटु सत्य है। भारत में राजनेता और नौकरशाह व्यापारियों के साथ मिल कर देश की संपत्ति लूटते हैं, गरीबों को जीने की बुनियादी जरूरतों व मदद से वंचित करते हैं, जमीन से लेकर कोयला और वन्य–जीवों तक के प्राकृतिक संसाधनों की चोरी करते हैं तथा राजनीतिक वंशवाद की आड़ में धन का संरक्षण करते हैं। कुछ दिन पहले ही कोयला खदानों के आवंटन पर सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय और काला धन का मुद्दा इसके ठोस उदाहरण हैं। इन मामलों में चीन हमसे बहुत अलग है, काम और लक्ष्य के प्रति अनुशासन, भ्रष्टाचार पर कठोर नियंत्रण और व्यापारिक प्रबंधन की गुणवत्ता में उससे हमारी कोई तुलना ही नहीं है।

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

आयुर्वेद की कुछ चमत्कारी औषधिया

जामुन : १. जामुन की छाल या गुठली सुखाकर बारीक पीस लें। ६–६ ग्राम प्रातः सायं ताजे पानी से २० दिन लेने पर मधुमेह (शुगर) में लाभ होगा। ५० ग्राम जामुन रोज खायें लाभ होगा।

२. जामुन की गुठलियों का चूर्ण ३ ग्राम शाम को पानी से लें, स्वप्नदोष दूर होगा।

३. जामुन की गुठली व बहेड़ा की छाल का चूर्ण समान मात्रा में ४ ग्राम प्रातः लें बार–बार पेशाब आना रुक जायेगा।

४. जामुन की छाल छाया में सुखाकर पीस लें कपड़छन कर लें, गाय की दही या छाछ (मट्ठा) से ३ ग्राम प्रातः लें। दस्त, पेचिश, संग्रहणी ठीक हो जायेंगे।

अकरकरा : १० ग्राम, २० ग्राम मुनक्का (बीच निकले) दोनों को बारीक पीस लें, २ ग्राम प्रातः दूध से लें, मिर्गी रोग दूर होगा।

बरगद : १. इसका दूध पैरों की फटी एड़ियों में भरने से बिवाई ठीक होती है।

२. बताशे में दस बूंद दूध भरकर प्रतिदिन दूध से लें, पेशाब रूककर आना, जलन होना दूर होगा व शरीर शक्तिशाली बनेगा। दूध में रूई भिगोदकर रखने से दांत दर्द दूर होता है।

अरहर : अरहर की दाल ३० ग्राम को २०० ग्राम पानी में उबालकर इसका पानी पिलाने से भांग का नशा उतर जाता है। प्रदर, नपुंसकता शीघ्र पतन व स्वप्न दोष नष्ट होते हैं।

पियाबांसा : पियाबांसा की पत्तियों का काढ़ा पीने से खांसी दूर होगी। कफ, पित्त रोग तथा उर्ध्व रक्त पित्त में विशेष लाभकर है।

करेला : करेला कच्चा खाने से मधुमेह तथा लौदोरिक वात की विशेष औषधि है।

खेजड़ा : इसके तने की अन्छील को पानी से फंकी लेने से सन्तान अवश्य होगी।

कपास : इसके पेड़ के पत्ते व फूल, दूध के साथ लें गर्भ अवश्य ठहरेगा। मासिक धर्म के खोलने में विशेष लाभकर है।

सन : (जिसकी रस्सी बनती है) इसके १८ बीज गाय के दूध में पीस छानकर पीने से बन्ध्या स्त्री को भी पुत्र होगा। बादी खट्टा मीठा भोजन न लें। हिचकी रोग में विशेष लाभकर है।

बिजौरा नींबू : इसके बीज १० पीसकर गाय के दूध के साथ फंकी लेने से अवश्य मासिक आयेगा।

अमरूद : अमरूद के मुलायम पत्ते चबाने से दांतो के दर्द में लाभ होता है। अमरूद खाने से अफीम, भांग, चरस, गांजा का नशा उतर जाता है।

बच : बच का थोड़ा सा चूर्ण शहद से चटाने पर बच्चा शीघ्र बोलेगा। बच का ४ रत्ती चूर्ण शहद से चाटने से तुतलाना ठीक होता है।

नाग केशर : इसके बीजों का चूर्ण गाय के घी में मिलाकर चाटें, ऊपर से गाय का दूध पियें तो निःसन्देह पुत्र उत्पन्न होता है। इन दिनों में गाय का दूध ही लें।

शतावर : शतावर का कपड़छन चूर्ण ३ ग्राम दूध में मिलाकर २ माह लें, नेत्र ज्योति बढ़ेगी और वीर्य पुष्ट होगा।

पत्ता गोभी : इसका काड़ा बनाकर गरारे करें टौंसिल ठीक होंगे।

लाल प्याज : यह श्वांस रोग में लाभकर हैं। काटकर सिर पर रगड़ने से गंजापन दूर हो बाल उगेंगे।

गाजर : नियमित खाने से बालों का गिरना, सफेद होना बंद होता है।

अखरोट : इसका तेल लगाने से दाद ठीक होता है मुंह में छाले हो तो इसकी छाल खूब खायें। इसके तेल की बूंदे नाक में डालने से लकवा होगी को लाभ होगा। इसकी गिरी खाने से स्मरण शक्ति बढ़ती है।

चमेली : इसके पत्ते चबाने से छाले दूर होंगे।

पान :- पान के पत्ते का डण्ठन या पान कत्था भी छाले ठीक करता है।

जबासा :- जबासे की जड़ गंगाजल में पीसकर लेप करने से सिर दर्द ठीक होगा।

कठेहरी : कठेहरी के एक तोला बीज खिलाने से खाज खत्म, उल्टी होना सम्भव है।

अमलतास : अमलतास इसके पत्तों का रस लगाने से दाद, खाज में लाभ होगा।

टमाटर : १. टमाटर की हरी पत्तियों का रस जले स्थान पर लगाने से जलन शान्त होती है।

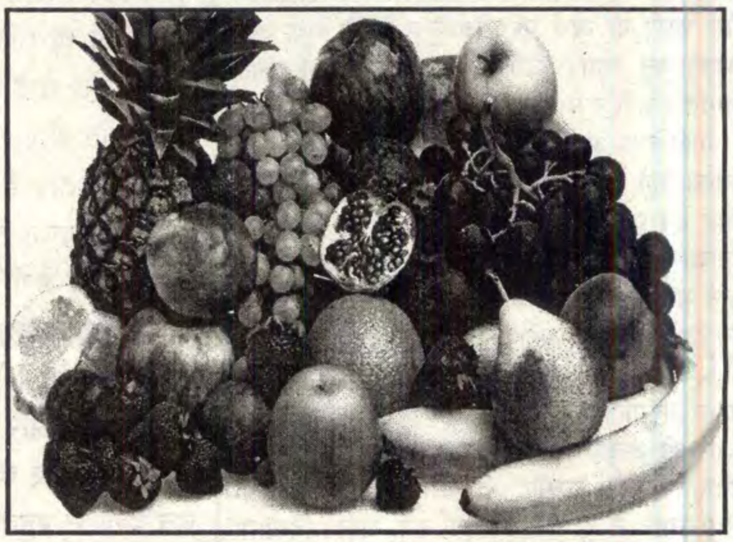

२. टमाटर का रस २५ ग्राम, खाने का सोडा १० ग्राम, गरम जल से लेने से अजीर्ण दूर होगा।

लहसुन : लहसुन की साफ पत्ती ५० ग्राम, हींग २५ ग्राम अदरक के रस में तब तक घोंटे जब तक मिल न जायें। आधे–आधे ग्राम की गोली बना लें। प्रातः सायं जल से लें। वायु के विकार, पेट दर्द, मन्दाग्नि, स्त्रियों की मासिक रुकावट अवश्य दूर होती है।

मूली : मूली को खोखला कर २५ ग्राम रसौल भर दें फिर मुंह बंद कर उपलों की गरम राख में भस्म कर लें। रसौत निकालकर मूली के रस में घोट कर झडबेरी के बराबर गोलियां बना लें दोनों समय पानी से लें खूनी बवासीर में लाभ हैं गर्म चीजों का परहेज रखें।

अंगूर : अंगूर की बेल के पत्ते ६० ग्राम पानी में पीस छान, लाहोरी नमक मिलाकर पिलायें। गुर्दे के दर्द से तड़फता मरीज ठीक हो जायेगा।

अनन्नास : अन्नास के रस में जीरा, पीपल, जायफल व काला नमक का समभाग चूर्ण थोड़ा–सा मिलाकर दोनों समय देने से कुछ दिन में अधिक पेशाब आना बन्द हो जायेगा।

सौठ : सौठ की जड़ ५ ग्राम कालीमिर्च १० ग्राम, ५० ग्राम घी में मिलाकर पिलाने से सर्प का जहर उतर जायेगा। सूजन की सर्वश्रेष्ठ औषधि है। सौठ के उबले पानी में बच्चे को बिठाने से वह जल्दी चलता है।

केतकी : इसके रस की मालिश करने से मुंह की झाईं, कील मुंहासे नष्ट होते हैं। इसके पत्तों को पानी में पीस छानकर पिलाने से अफीम का नशा उतर जाता है। दूश या घी पिलायें।

छोटी दूदधी : इसका एक चम्मच रस, बंधी हुई दही एक चम्मच थोड़ा नमक मिलाकर खाली पेट लेने से दस्त, ऐंठन व खूनी दस्त ठीक होते हैं। शाम को भी लें। रक्तार्श की विशेष दवा है। इसका दूध आंखों का जाला काटता है।

आम : आम के नरम पत्ते ३ ग्राम आधा किलो पानी में उबालें, आधा पानी रहने पर छान कर दो बार पिलायें गरम–गरम। कै (हैजा) ठीक होगा। आम के गिरे हुए पत्ते लाकर, बारीक पीस लें। ताजे पानी के साथ २ ग्राम लें। १५–२० लें, मधुमेह ठीक होगा।

बबूल : बबूल की कच्ची फलियां छाया में सुखाकर पीस लें, बराबर की मिश्री मिला लें। ६'६ ग्राम सवेरे शाम दूध के साथ लें। स्पप्न दोष दूर होगा। छाल की चायं बनाकर पीने से भी मिटता है।

आक : आक की जड़ २० ग्राम, काली मिर्च १० ग्राम, बकरी के दूध में पीसकर चने के बराबर गोली बना लें यह गोली खिलाने से मलेरिया बुखार नहीं होगा। दूध लगाने से दाद ठीक हो जाता है। दूध सरसों के तेल में डालकर पका लें। मालिश करें, खुजली ठीक होगी। बिच्छू के काटे स्थान से रक्त निकालकर दूध लगाने से विष उतर जाता है।

शरीफा : शरीफा के पत्तों का रस नाक में डालने से मिर्गी दूर होती है।

ढाक : चार दिन ऋतुकाल के पूर्ण घोटकर पीने से गर्भ नहीं ठहरता ह। उदर कृमि नाशक है।

केला : केला के पत्तों की राख शहद में मिलाकर चाटें, खांसी दूर होगी। ४–५ कच्चे केले नियमित सेवन करें अमल पित्त, अल्सर नष्ट होगा।

दो केले ३० ग्राम दही में मिलाकर खाने से कुछ दिन में दस्त, पेचिश, संग्रहणी में लाभ होगा। दो केले १० ग्राम शहद में मिलाकर खाने से पित्त के दर्द में आराम होता है। दो केले प्रतिदिन दूध के साथ खाने से शरीर मोटा होगा। छिलका उतारकर सफेद अकौबा का दो बूंद दूध मिलाकर खाने से पीलिया नष्ट होता है।

अर्जुन : अर्जुन की अन्तछाल सुखाकर बारीक कूट लें। एक चम्मच चूर्ण–दूध से लें या दूध में डालकर चाय बनाकर पीयें, हृदय रोगों को लाभकर है।

गेंदा : गेंदे के पत्ते पीसकर पानी मिलाकर खाली पेट पियें, हृदय रोग व पथरी नष्ट होगी। अर्श में टिकिया बनाकर बांधे।

गेंहू : गमले में गेंहू बोकर छांव में रख दें। पौधे बन जाने पर एक पौधे की जड़ पानी से धो–पीसकर थोड़ा पानी मिलाकर, कपड़े में छानकर पीये। हफ्ते दस दिन में कैंसर में लाभ होगा।

गाय के दूध, घी का औषधि के रूप में प्रयोग

गाय का घी शरीर में कई प्रकार के जहर को नाश करने वाला, घाव को भरने वाला, ताकतवर, हृदय के लिए लाभकारी होता है। ताजा घी अधिक सुगन्धित एवं स्वादिष्ट होता है।

गौदुग्ध कैंसर के विषाणु को नष्ट करता है। गौदुग्ध सेवन हृदय रोग, कैंसर, क्षय रोग इत्यादि बीमारियां से निजात दिलाने में सर्वोत्तम सहायत होता है।

प्राचीन भारत में दूध बेचना और पूत बेचना, दोनों समान माने गए हैं। गाय और गाय का दूध बेचना पाप माना जता था। आज भी भारतवर्ष में कई स्थानों पर गाय और गाय का दूध बेचा नहीं जाता हैं। बल्कि वह (गाय और गाय का दूध) दान स्वरूप दिया जाता है।

मेडिकल साइंस एवं मेडीकल कॉउन्सिल ऑफ इंडिया के सूत्रों का मानना है कि अहीर, भरवाड़, रेबारी और यादव जातियों में कभी भी आँखों की बीमारी या मोतियाबिंद इत्यादि की शिकायत् नहीं मिलती हैं, क्यों ये चारों जातियां ग्वाला जाति हैं। इन चारों जातियों के किसी भी व्यक्ति को चश्मा नहीं लगता है। वे कई प्रकार के पशुओं का पालन करते हैं। परन्तु स्वयं गो दुग्धाहार ही लेते हैं। जंगलों में गाय चराते एवं भटकते हुए भी पूर्ण रूपेण स्वस्थ रहते हैं, यह गोदुग्ध एवं घी की विशेषता बताने वाला सबसे बड़ा उदाहरण है।

दूध मानव जाति को मिली एक अमूल्य अनुपम भेंट हैं। सर्वोत्तम आहार होने के बावजूद गरीबी, अज्ञानता, मिलावट, भ्रष्टाचार आदि कारणों से दूध का जितना प्रयोग करना चाहिए, उतना नहीं कर पाते हैं।

एक समय था जब भारत में दूध की नदियां बहती थी और आज करोड़ों व्यक्ति ऐसे हैं, जिन्हें गौदुग्ध के दर्शन नहीं हो पाते। गौदुग्ध, घी, दही के सेवन से पूर्व में व्यक्ति बुद्धिमान, निरोगी एवं शक्तिमान होते थे, इन सबके अभाव में आज समग्र भारत देश की जनता कुपोषण एवं नाना प्रकार के रोगों से ग्रस्त है।

❖ आँखों के दर्द होने पर गौदुग्ध की पट्टी रखने से दर्द समाप्त हो जाता है।

❖ गौदुग्ध एक कटोरे में

लेकर पूरे शरीर पर मालिश कर नहाने से अनेक रोगों से मुक्ति मिलती है एवं चमड़ी गौरी, चमकीली और तेजस्वी बनती है।

❖ गाय के दूध की धुली (दलिया) खाने से प्रसुता स्त्री को कोई भी रोग नहीं होता है।

❖ महाभारत में राजा युधिष्ठिर ने गौदुग्ध को अमृत तुल्य माना है। यक्ष ने जब युधिष्ठिर से पूछा कि पृथ्वी पर अमृत क्या है? धर्मराज ने उत्तर दिया–गौ दुग्ध ही पृथ्वी पर एकमात्र अमृत है।

❖ गौदुग्ध से मानव शरीर में कायाकल्प पर उसके सभी अंगों को पुष्ट बनाकर अन्य अनेक रोगों को नष्ट किया जाता है, कायाकल्प से नया जीवन मिलता है।

❖ यूरोप के कई हिस्सों में सैनिकों को पौष्टिक आहार के लिए गौदुग्ध, घी और अन्य सामग्री रोजाना दी जाती है।

❖ घर में गाय के घी का दीपक जलाने से वातावरण की अशुद्धि दूर होकर वायुमंडल शुद्ध एवं पवित्र बनता है।

❖ काली गाय का दूध त्रिदोष नाशक और सर्वोत्तम है। शाम को जंगल से चरकर आई गाय का दूध सुबह के दूध से हल्का होता है।

❖ गोदुग्ध से कोलेस्ट्रोल की वृद्धि नहीं होती है। बल्कि हृदय एवं रक्त के प्रवाह में आने वाली बाधाओं को दूर करता है।

❖ गाय का गरमा गरम दूध पीने से कफ एवं गरम करने के पश्चात् ठण्डा कर पीने से पित्त का नाश होता है।

❖ अनेक धर्माग्रन्थों के अनुसार गौदुग्ध, घी, दही, शक्कर और वर्षा के शुद्ध जल से पंचामृत बनाया जाता है। भगवान की प्रतिमा का प्रक्षालन भी इस पंचामृत के द्वारा किया जाता हैं।

❖ जलोदर के रोगी को पानी पीना सख्त मना है, वह सिर्फ गाय का दूध पीकर रहे तो रोग में सुधार होता है।

❖ गौमाता की कृपा से दिव्य शक्ति वाला बच्चा पाना आसान है। गर्भ धारण करने वाली महिला को एक माह तक चांदी की कटोरी में देशी गाय के दूध का दही जमाकर खिलाएँ। दिव्य शक्ति वाला बालक जन्म लेगा। गाय के घी का महत्व शेष पृष्ठ 11 पर

कलियुग के दास न बनें

✍ डॉ. उषा खोसला

कलियुग में मनुष्य स्वभाव से ही दूसरे की बुराई सुनने को हर समय तैयार रहता है, केवल सुनता ही नहीं अपितु उन अनुचित बातों को अपनाने में उसे कोई भी संकोच नहीं होता। वर्तमान में सत्य पर प्रहार तथा असत्य हिंसा का प्रचार तथा प्रसार हो रहा है। सात्विक कर्मों को रोका जा रहा है तथा राष्ट्रवादियों पर अत्याचार हो रहे हैं। जिन आततायियों, आतंकियों ने अपने अपराधों को स्वीकार कर लिया है उनका पालन–पोषण हो रहा है। उन्हें हर प्रकार की सुरक्षा प्रदान की जा रही है। इसे दया या करुणा नहीं कहा जा सकता है। सत्ता में बने रहने के लिए ... सिद्धि है, कायरता है, राक्षसी ... मनुष्य ने शास्त्र नीति ... धर्मग्रन्थ को भुला दिया है। यही अधर्म में जीना, कलयुग का दास बनना है।

धर्म शास्त्रों में वर्णन है कि दूसरे को विष देने वाला, निहत्थे पर शस्त्र चलाने वाला, सम्पत्ति छीनने वाला, भूमि तथा नारी का अपहरण करने वाला आततायी है। आततायी को मारने से पाप नहीं लगता। पापी द्वारा पाप की ही वृद्धि होगी। परिणाम स्वरूप समाज में अराजकता की वृद्धि हो जायेगी। समाज का एक बहुत बड़ा भाग आज कलियुग का शिकार बन बैठा है। मनुष्य ने यह आचरण स्वयं ही स्वीकार किया है। क्योंकि वह अच्छे, सभ्य, संस्कारित, पवित्र, राष्ट्रप्रेमी, सात्विक प्रेमी मनुष्य की बात सुनता ही नहीं। उसके साथ जुड़ता ही नहीं। उसे भय और आतंक में जीना स्वीकार है। शान्ति, शुभ, समृद्धि, आनन्द, आत्मबल को बढ़ाना भी नहीं चाहता। इससे बढ़कर दुर्भाग्य समाज का और क्या हो सकता है? पवित्र, सात्विक, परोपकारी, स्वस्थ लोग भी तो इसी समाज में रहते हैं। जिन्होंने अपने आपको कलियुग के प्रभाव से सुरक्षित रखा हुआ है। पापाचार, हिंसा से स्वयं को बचाकर, धार्मिक अनुष्ठानों का आश्रय लेकर, पवित्रता एवं सरलता धारण कर वासनाओं से मुक्त हैं। ऐसे व्यक्ति परहित तथा राष्ट्र सेवा में लगे शरीर से स्वस्थ तथा मन से पवित्र हैं। परिस्थितियां इनको विचलित नहीं करती। अपने कर्त्तव्य पालन में निरन्तर तत्पर हैं। आलस्य तथा मोह इन्हें घेरता ही नहीं। ईर्ष्या तथा राग–द्वेष की आग से जलते नहीं।

मनुष्य प्रकृति से भी कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकता है। मनुष्य को महापुरुष बनाने के लिए प्रकृति विभिन्न प्रकार से प्रेरित करती है। यदि सीखने वाली बुद्धि हो तो मनुष्य वृक्षों को देखकर भी जीवन में परिवर्तन ला सकता है। वृक्ष मनुष्य को छाया, फल, लकड़ी देता है। फलों के लिए वृक्ष को पत्थर मारते हैं। वृक्ष मौन हो सहन करता है और फल देता है। इससे सहनशीलता का पाठ यदि मनुष्य सीख जाये जीवन में क्रान्ति घटित हो जाये। सहनशीलता के अभाव में परिवार तथा समाज में टकराव की स्थिति पैदा होती है। संतोषी लोगों के जीवन में झांके, उनको योग्यता अनुसार जो कुछ मिलता है प्रभु का प्रसाद मानकर स्वीकार कर उसी में आनन्द अनुभव करते हैं। जो लोग सीखना ही नहीं चाहते वे अपनी आंखें अन्द कर लेते हैं और कलियुग के दास बन जाते हैं।

मनुष्य की आवश्यकताएं भगवान पूर्ण करते हैं लेकिन उनको छल, छिद्र तथा कपट नहीं भाता है। सीखने वाला हो तो घास से भी विनम्रता सीख लेता है। घास को पांवों तले रौंद कर कैसे आगे निकल जाते हैं, किन्तु घास जैसी थी वैसी ही बनी रहती है। सूर्य विश्व को प्रकाश देता है। उससे बड़ा दानी और कौन हो सकता है? सूर्य से मनुष्य देने की शिक्षा ग्रहण कर सकता है। जिसकी कृपा से इस धरा पर जन्म हुआ इस भगवान को धन्यवाद भी नहीं करता। भगवान कब से प्रतीक्षा में बैठे हैं कि कोई तो मेरे दिव्यधाम को प्राप्त करे? कोई तो आनन्द को मांगे? लेकिन मनुष्य भौतिक वस्तुओं की चाह ही नहीं त्यागता। किन्तु कलिकाल में फंसा मनुष्य कभी भी इन संकेतों को समझता ही नहीं। यह कैसी सभ्यता है जो मनुष्य को भगवान की ओर पीठ करने को कह रही है? यह असभ्यता है।

भ्रूण हत्या, गौ हत्या, कहां बन्द हुई? यह कलियुग का प्रभाव ही है। भ्रष्टाचार और अराजकता की दुर्गन्ध चारों ओर से आ रही है। जीवन न तो शहरों में सुरक्षित रहा और न गांवों में। राष्ट्रविरोधी शक्तियां किस प्रकार से इस राष्ट्र पर आंख लगाये बैठी हैं और इस राष्ट्र को हड़पना चाहती हैं। जीवन से निष्कामता विदा हो गई। राष्ट्र के रक्षक ही भक्षक बन बैठे हैं। राष्ट्रवासियों के सेवक स्वयं को स्वामी मानकर मनमाना व्यवहार कर रहे हैं। धरती मां पाप के बोझ से दबी जा रही है। उसकी वेदना को कोई नहीं समझ पा रहा। संवेदनशीलता खो गई है। सब कंकड़ पत्थर इकट्ठा करने में लगे हुए हैं। मानवता की मूल्य खोते जा रहे हैं। जिस जीवन में मानवता के शेष पृष्ठ 11 पर

एक ग्रंथ जिसने भारत-पाक को आणविक युद्ध की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया!

ब्लाइन्ड मेन ऑफ हिन्दुस्तान इन्डो–पाक न्यूक्लियर वारः लेखक जनरल कृष्णास्वामी सुन्दरजी

✍ हरिकृष्ण निगम

क्या हमारे देश में किसी को इस तथ्य पर सहसा विश्वास होगा कि भारत के अब तक के सर्वाधिक दुस्साहसी सेना के चीफ आफ आर्मी स्टाफ जनरल कृष्णास्वामी सुन्दरजी ने औपन्यासिक शैली में भारत और पाक के बीच सम्भावित आणविक युद्ध के परिदृश्य की एक पटकथा लिखी थी जिसके प्रकाशित होते ही दोनों परस्पर विद्वेषी देश क्योंकि आणविक शीर्ष युद्ध–प्रक्षेपास्त्रों से युक्त थे किसी भी क्षण उनमें प्रथम प्रहार के द्वारा बृहद विनाश व नरसंहार का क्षण आ सकता था। इस तथ्य की चर्चा कश्मीर विषयों के पुराने विशेषज्ञ व विश्लेषक स्टेनली वोल्पर्ट ने अपने हाल के अप्रैल २०१४ में प्रकाशित समीक्षित उपर्युक्त ग्रंथ में की है। वैसे पहले भी कई दशकों से पाकिस्तान–परस्त यह विशेषज्ञ १४ से अधिक ग्रंथ और भूराजनीतिक विषयों पर शोध पत्र यूनीवर्सिटी आफ कैलीफोर्निया प्रेस अमेरिका के बर्कले और लासएन्जेलिस तथा यूरोप के लन्दन स्थित प्रतिष्ठानों से प्रकाशित कर चुका है और विद्वत समाज में कश्मीर की अन्तर्राष्ट्रीय प्रचार लॉबी में आज भी उन्हें सर्वाधिक उद्धृत किया जाता है। उन्हें भारत का अंधविरोधी तो नहीं पर उनके भारत –पाक के बीच सतत संघर्ष की सम्भावना अथवा परस्पर सहयोग की वकालत करने पर क्षेत्रीय शान्ति का प्रवक्ता भी पश्चिम में माना जाता है। उनके कुछ ग्रंथों के शीर्षक ही उनके मन्तव्य को स्पष्ट कर देते हैं और इसलिए भारत में वे सर्वदा विवाद के घर में बराबर कई दशकों से निरन्तर रहे हैं और सरकार ने उन पर प्रतिबंध भी लगाए थे। पर यह भी सच है कि चाहे अमेरिका हो या पश्चिमी देश किसी भी स्तर पर अब तक उन्हें उपेक्षित नहीं किया गया है। 'नाइन आवर्स टु रामा', 'एन एरर ऑफ जजमैन्ट, 'रुट्स ऑफ कन्फ्रन्टेशन इन साउथ एशिया'' अफगानिस्तान, पाकिस्तान, इण्डिया एण्ड द सुपरपावर्स, 'जिला ऑफ पाकिस्तान ए लाइफ, ''जुल्फी भुट्टो ऑफ पाकिस्तानः हिज लाइफ एण्ड टाइम्स, ''शेमफुल, फ्लाइट 'द लास्ट यूयर्स ऑफ ब्रिटिश एम्पायर इण्डिया''– उनके ग्रंथों के उपयुर्क्त कुछ शीर्षक ही लेखक के पूर्वाग्रह युक्त दृष्टिकोण व मानसिकता की ओर इशारा करते हैं। जहाँ तक उपर्युक्त समीक्षित ग्रंथ का प्रश्न है वयोवृद्ध स्टैनली वोलपर्ट उसके समपर्ण में ही लिखते हैं– उन निर्बोध कश्मीरी प्रताणना के शिकार लोगों को जो भारत और पाकिस्तान की संघात्मक आपसी गोलियों की बौछार में पिछले ६३ वर्षो में निरन्तर मर रहे हैं। मेरी प्रार्थना शन्ति के प्रति है! ''शुरु से आखिर तक इस ग्रंथ में कश्मीर समस्या की

ऐतिहासिक जड़ में जाते हुए पहले नेहरू जी को और बाद में पहली, दूसरी और तीसरी लड़ाई में भारतीय प्रधानमंत्रियों को युद्धोन्माद के लिए दोषी ठहराया गया है। क्योंकि लेखक शुरु से पाकिस्तान के शासकों या तानाशाहों से निजी रूप से परिचित था या उन ब्रिटिश सैकड़ों सेना के अधिकारियों से परिचित था जो विभाजन के समय पाकिस्तान में थे, भारत के पक्ष की उपेक्षा करता रहा है। चाहे बंगलादेश का निर्माण हो या शिमला का समझौता या जिया उल हक का सदा अपहरण हो, लेखक कश्मीरियों के संघर्ष को ''आजादी की क्रान्ति'' ही आज तक कहता है और इसलिए उपर्युक्त ग्रंथ में जिन भारतीयों ने डा० गुलाम नबी फई के १० वीं अन्तर्राष्ट्रीय कश्मीर शान्ति सम्मेलन में आमंत्रण को स्वीकार किया था जैसे दिलीप पाडगांवकर, राजदीप सरदेसाई और अरून्धती राय आदि ने कश्मीर के देशद्रोही नेता सैयद अली गिलानी, शब्बीर अहमद शाह, मीरवाइज उमर फारूख और कुख्यात मोहम्मद यासीन मलिक के उनको स्टैनली वोल्पर्ट का भी वरद हस्त प्राप्त था। जिस तरह के विस्फोटक प्रस्ताव पहले से ही वहाँ पारित करने जाने वाले थे उनका संज्ञान उपर्युक्त सभी व्यक्तियों को या और इसलिए जिन्होंने इस कलंक को कश्मीर के वार्ताकारों के रूप में गहरा किया उनकी निर्लज्जता व पाक–परस्ती का खुलासा देश में पूरी तरह हो चुका है। हर भारतीय को वोल्पर्ट के उपर्युक्त ग्रंथ को इसलिए पढ़ना अपेक्षित है क्योंकि देश में रहने वाले पंचमर्नियों में से बुद्धिजीवी, बड़े पत्रकारों, सम्पादकों व लेखकों को भी जनता पहचान ले!

स्टेनली वोल्पर्ट की शब्दावली में भारत–पाकिस्तान दोने ने 'आणविक दहलीज' को पार कर लिया था और लगता था कि वे दोनों देश विनाश के लिए आपस में एक दूसरे को एक विक्षिप्त की तरह आश्वस्त करने में जुटे थे। भारत की भर्त्सना करते हुए उसे एक स्थायी लोकतंत्र होने के कारण लेखक उसके हर कदम के लिए सन्देह की दृष्टि से देखकर स्थिति बिगाड़ने के लिए उत्तरदायी मानता है। इसी कड़ी में जब जनरल सुन्दरजी ने एक साल तक चलने वाला 'ब्रासटैक्स नामक सैनिक अभ्यास की घोषणा की थी जिसमे थल सेना, वायु सेना व नौसेना का समन्वित 'ट्राइटेन्ट' नामक संचालन में हजारों पैदल इन्फ्रेन्टी सैनिकों को पाकिस्तान की सीमा तक ले आए थे तब पाकिस्तान चिन्तित हो गया और उसने अपनी सेना में 'रेड अलर्ट' जारी कर दिया था। विश्लेषकों के अनुसार भारत का सैन्य–अभ्यास पाकिस्तान को भड़का कर उसे भारत पर हमला करने के लिए उकसाना था। यदि ऐसा होता तो जनरल सुन्दरजी का प्रच्छन्न मंतव्य होता तो पाकिस्तान के पारम्परिक युद्ध का प्रतिशोध वे उस पर आणविक हमले के प्रत्युत्तर से देते जिससे उसकी अणु सक्षमता की हृदयस्थली पर चोट पहुंच सकती थी। लेखक के अनुसार जनरल सुन्दरजी ने अपनी निराशा और भड़ास और अपनी काल्पनिक औपन्यासिक वर्णात्मक कृति भावी भारत पाक आणविक युद्ध को परिदृश्य व पटकथा की रचना द्वारा व्यक्त की थी। वे भारत सरकार पर दबाव भी डालना चाहते थे कि वे अपने अणु आयुध नियंत्रण व निर्देश प्रणाली में परिवर्तन कर प्रथम प्रहार के सिद्धान्त की समीक्षा कर उसमें लचीलापन लाए। एक और रणनीतिक निर्णय द्वारा नीतियों की पुनर्वीक्षा की मांग भारत में उठ रही थी, पाकिस्तान की तरफ से गुप्त रूप से 'ब्रासटैक्स' के जवाब में जनरल मुर्शरफ कुछ साल बाद ही कारगिल पर हमले की गोपनीय तैयारी में लगे थे। प्रधानमंत्री नवाजशरीफ भी उसी तरह बहके हुए थे जैसे चीफ ऑफ आर्मी 'स्टाफ (सी. ओ. ए. एस) जनरल मुशर्रफ।

पर इस बीच में इस सहस्त्राब्दी की सबसे बड़ी अनहोनी घटना ११ सितम्बर २००१ के न्यूयार्क के विश्व व्यापार केन्द्र की अट्टालिकाओं के ध्वंस के रूप में हो गई। उसके बाद का घटनाक्रम परिचित है जिसमें सेक्रेटरी ऑफ स्टेट कौलिन पावेल, डिक चेनी, जार्ज डब्लू, बुश और जनरल मुर्शरफ और आई. एस. आई. आतंकवाद विरोधी अभियान के चलने वाले नाटक के मुख्य पात्र बन गए। पाकिस्तान के लिए यह सुअवसर था कि वह बीसो बिलियन डालरों की अमेरिकी राशि और हथियारों के जखीरा के कुछ हिस्से को कश्मीर के नाम पर भारत के विरूद्ध झोंक दे। एक ओर शान्ति प्रक्रिया के नाम पर भारत को बरगलाते रहना दूसरी ओर आतंकवादियों का भारत में निर्यात– इस नीति ने वर्तमान संप्रग सरकार की विदेश नीति व सामरिक भूराजनीतिक व रणनीति की कमर तोड़कर रख दी। स्टेनल वोल्पर्ट का दावा है कि वे स्वयं दशकों से चले आए इस संघर्ष के सबसे पुराने साक्षी के रूप में लिखते रहे हैं और भारत भी इस खेल में दोषी है। इसमें डा० अंगना चटर्जी भी इन्टरनेशनल पीपुल्स ट्रिब्यूनल ऑफ ह्यूमेन राइट्स के पारित किए व सरकार के विरूद्ध प्रस्तावों की व्याख्या करती थी। भारत के टाइम्स ऑफ इण्डिया व दूसरे अंग्रेजी पत्रों में अरून्धती राय व दिलीप पाडगांवकर जैसी अग्रलेख लिखले वाली परिचित पत्रकार है। कश्मीरी हुर्रियत नेताओं ने दावा किया कि जम्मू के हिन्दू व लद्दाख के बौद्ध नेताओं का भी उन्हें पूरा समर्थन है कश्मीर में शान्ति और भारत के षडयंत्रों का पर्दाफाश करने के लिए सार्क के काठमाण्डू, दिल्ली इस्लामाबाद और मुजफ्फराबाद कार्यालय में एक विशेष प्रकोष्ट की स्थापना का भी निर्णय लिया गया। वोल्पर्ट इस बात से सन्तुष्ट है कि उनकी अपनी पहल को अब भारतीय भी अनुमोदित कर रहे हैं। पाकिस्तानी और कश्मीर के मुस्लिम नेताओं की शान्ति के प्रयासों की पहल पर लेखक ने सलमान अहमद के पाकिस्तानी रॉक बैन्ड, मीरा नायर के फिल्मों, अरून्धती राय की रचनाओं और देश के कुछ अंग्रेजी पत्रों जैसे टाइम्स ऑफ इण्डिया, हिन्दू इण्डियन एक्सप्रेस की सकारात्मक भूमिका की भी चर्चा की है। स्पष्ट है कि इन्हीं कारणों से देश के हर युवा को इस पुस्तक को एक चेतावनी या भावी खतरे की प्रकृति भली भांति समझने के लिए पढ़ना शेष पृष्ठ 11 पर

संस्कार विहीन शिक्षा-बढ़ते अपराध

✍ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

देश में निरंतर बढ़ते अपराधों विशेष रूप से अपनी आधी आबादी पर हो रहे बलात्कार जैसे जघन्य अत्याचारों को देखते हुए इसके कारणों और दूरगामी समाधानों पर जब हम विचार करते हैं तो देश की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में कमियाँ और दोष स्पष्ट दिखाई देते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत देश के नीति नियंताओं ने इस प्रचलित शिक्षा प्रणाली को चुन लिया। इस शिक्षा व्यवस्था को ब्रिटिश गुलामी के दिनों में लार्ड मैकाले द्वारा इस देश को सदा सर्वदा के लिए मानसिक रुप से गुलाम बनाए रखने के लिए लागू किया था। लार्ड मैकाले ने इस शिक्षा प्रणाली को ब्रिटिश साम्राज्य की नींवे मजबूत करने के उद्देश्य से इस सोच के साथ थोपा था कि हम इस देश की भावी पीढ़ी को उसकी संस्कृति की जड़ों से काट देंगे। परन्तु ना जाने क्यों किन कारणों से स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत देश की नीति नियंताओं ने गुलामी की मानसिकता की प्रतीक मैकाले की शिक्षा प्रणाली को अपनी भावी पीढ़ी के निर्माण के लिए अपना लिया गया जिसके दुष्परिणाम हम अपने समाज की वर्तमान अवस्था में भुगत रहे हैं। मैकाले की इस शिक्षा प्रणाली में तथाकथित विकास के नाम पर विनाश की ओर धकेलती इस शिक्षा में संस्कारों, धर्म शिक्षा आदि का कोई स्थान नहीं था। मैकाले की यह शिक्षा प्रणाली केवल अंग्रेजों की सेवा करने के लिए क्लर्क और बाबू बनाने के लिए थी। मैकाले की इस शिक्षा प्रणाली में वर्तमान समय में भी हम अच्छे डाक्टर, इंजीनियर, मैनेजर आदि तो बना सकते हैं लेकिन चूँकि इसमें संस्कार देने की कोई व्यवस्था ना होने के कारण इन डाक्टरों, इंजीनियरों और मैनेजरों को हम एक अच्छा संवेदनशील मनुष्य बना पाने में पूरी तरह नाकाम हैं। यदि एक अच्छा डाक्टर एक अच्छा इंसान नहीं है तो ईश्वर का रूप समझा जाने वाला डाक्टर सेवा की भावना से किए जाने वाले कार्य को धन कमाने का व्यवसाय बना लेते हैं और शायद तभी किडनी चोरी, कन्याभ्रूण हत्या, माँ के गर्भ में लिंग परीक्षण, दवाईयों और जाँच में कमीशनखोरी जैसी घटनाएँ सामने आती हैं और पूरे चिकित्सक समाज को शर्मिंदगी झेलनी पड़ती है। कमोबेश यही स्थिति इस शिक्षा प्रणाली से उत्पन्न प्रत्येक प्रकार के व्यवसायी की हो जाती है।

इसके समाधान पर चिंतन करते समय हम पाते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत उस समय तीन प्रकार की शिक्षा प्रणालियाँ हमारे देश में उपलब्ध थीं। प्रथम–प्राचीनतम गुरूकुलीय शिक्षा व्यवस्था, जिसमें शिक्षार्थी ब्रह्मचारी अपने माता–पिता का लाड़ दुलार छोड़कर आचार्य के गुरूकुल में रहकर शिक्षा ग्रहण करते हुए नया जन्म पाते थे। गुरूकुलीय शिक्षा व्यवस्था में बिना किसी जाति, वर्ण या वर्गभेद के सभी ब्रह्मचारी एक साथ गुरुकुल में स्थापित आचार्य की व्यवस्था के अन्तर्गत रहते हुए जीवन की शिक्षा संस्कार प्राप्त करते थे। यह गुरूकुलीय शिक्षा व्यवस्था पहली बार महाभारत काल में भंग हुई जब राजा धृतराष्ट्र ने पुत्रों के मोह में अंधे होकर गुरु द्रोण को राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत रहकर दुर्योधन आदि समस्त कौरवों को शिक्षा देने के लिए

विवश कर दिया। तब शायद पहली बार दुर्योधन आदि को शिक्षा प्राप्त करते समय यह लगा कि हमारा आचार्य तो हमारे पिता की राज्य व्यवस्था के अधीन एक वित्तपोषित कर्मचारी हैं। अतएव उनके मन में कभी भी आचार्य के प्रति आदर का भाव नहीं रहता और उसी विद्यार्थी काल में आया जिद, उद्दंडता और बड़ों के प्रति अनादर का भाव जो आगे चलकर महाभारत के युद्ध का कारण बना। उस समय इस गुरूकुलीय शिक्षा की रक्षा के लिए स्वामी श्रद्धानंद ने शिक्षा यज्ञ में अपना सर्वस्व आहूत करते हुए सफलता पूर्वक हरिद्वार, इन्द्रप्रस्थ, माटिन्डु आदि स्थानों पर गुरुकुल स्थापित किए और इतिहास साक्षी है कि इन गुरूकुलों ने शिक्षा संस्कार देकर स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले कितने क्रांतिकारी तैयार किए। लेकिन इस गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली को उस समय के नेताओं ने पुरानी धार्मिक कट्टरता वाली और प्रगति विरोधी मानकर खारिज कर दिया।

दूसरी शिक्षा प्रणाली जो शायद उस समय के अनुकूल थी। महात्मा हंसराज द्वारा नवीन और प्राचीन को जोड़कर बनाई गई थी, एक अनूठे आंदोलन के रूप में चलाई गई दयानन्द एंग्लो वैदिक शिक्षा व्यवस्था को अपना जीवन समर्पित करके चलाने वाले तपस्वी महात्मा हंसराज ने स्थापित किया। जिसमें आधुनिकतम शिक्षा के साथ साथ महर्षि देव दयानन्द द्वारा दिए गए सत्य वैदिक आर्य सिद्धांतों से भी छात्रों का परिचय करवाया जाता था।

परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत शायद मानसिक गुलामी से पूरी तरह ना मुक्त हो पाने के कारण उस समय के नेताओं ने गुलामी की प्रतीक मैकाले की शिक्षा व्यवस्था को अपना लिया। बच्चों के मन कोमल संवेदनशील कच्ची उर्वर मिट्टी की तरह होते हैं। उनमें जैसे बीज बो दिए जाएँ बड़े होकर वैसे ही बन जाते हैं। आज की शिक्षा व्यवस्था द्वारा हमने बच्चों को केवल पाश्चात्य भोगवाद की प्रेरणा दी और किसी भी प्रकार के कोई संस्कार नहीं दिए। आज वही पीढ़ी युवा अवस्था में संस्कार विहीन होकर अपराधों की तरफ, विशेष रूप से भोगवाद में फँसकर, नारी को भोग की वस्तु मानकर बलात्कार सरीखे अपराध कर रही है। हम बड़ी–बड़ी बहस करते हैं और कानून व्यवस्था के लिए एक दूसरे पर दोषारोपण करते हुए राजनीति करते हैं। पर हमारा ध्यान इसी बीमारी के मूल यानि दोषी शिक्षा व्यवस्था पर नहीं जाता बल्कि उसका तो हम और अधिक व्यवसायीकरण करते जा रहे हैं। हम आज अपने बच्चों को बड़े–बड़े डोनेशन देकर उच्च शिक्षा इसलिए दिलवाते हैं कि वह बड़ा होकर किसी एम. एन. सी. में मोटा पैकेज लेगा। जब हम भी एक व्यापारी की तरह बच्चों की शिक्षा में व्यवसाय की तरह इनवेस्ट करते हैं और फिर रिटर्न की आशा करते हैं। हमने खुद भी कभी बच्चों की शिक्षा में संस्कार देने का प्रयास नहीं किया। लेकिन अब भी यदि हम जाग जाएँ और इन सभी बुराइयों की जड़ वर्तमान शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करते हुए नैतिक एवं धर्म शिक्षा को भी शामिल कर लें तो निश्चित रूप से बच्चों को संस्कारवान बना पाएँगे और यही बच्चे कल के अच्छे आदर्श नागरिक बनकर राष्ट्र की मजबूत बुलंद इमारत का आधार बनेंगे और जब हमारे नागरिक संस्कारवान और संभ्रांत होंगे तो अपराध स्वतः कम हो जाएँगे। कोई भी संस्कारवान व्यक्ति नारी पर अत्याचार नहीं करेगा। का भी जाता है–यदि पहले ही सावधानी बरती जाए और बीमारी पैदा करने वाले कारणों को ही समाप्त कर दिया जाए तो बीमारी पैदा ही नहीं होगी।

विजया-दशमी पर्व मनायें

विजया–दशमी पर्व मनायें, वीरों की जय कर दिखलायें।
जय हो देश महान, उत्तम करें राष्ट्र निर्माण।

चलें असत् से सत्य चाल कर,
गर्व करें संस्कृति विशाल पर।
मातृभूमि हित जियें जिलायें, आर्य बने पहचान।।
उत्तम करें......................
विजया–दशमी......................

चलें तमस से ज्योतिर्पथ पर,
हिलें डुलें न किसी विपत्ति पर।।
जगमग ज्योतिर्मय हो जायें, पहुँचा घर–घर ज्ञान।।
उत्तम करें......................
विजया–दशमी......................

चलें मृत्यु से अमृत पथ पर,
श्री राम चढ़े निर्भय इस रथ पर।
असुर विहीन समाज बनायें, उपजा त्याग बलिदान।।
उत्तम करें......................
विजया–दशमी......................

विजया–दशमी पर्व हमारा,
शस्त्रें का पूजन हो न्यारा।
शस्त्र–शास्त्र के शुचि बंधन से, महके हिंदुस्तान।।
उत्तम करें......................
विजया–दशमी......................

विमलेश बंसल, 'आर्या'

मर्यादा पुरुषोत्तम राम की ऐतिहासिकता

✍ डॉ. सत्यपाल सिंह

(पिछले अंक का शेष)

विदेशी दुष्प्रचार व दुराग्रह

कुछ नया अधिकतर विदेशी विद्वानों की मान्यता है कि भारतीय लोग मौखिक रूप से पढ़ते–पढ़ाते थे। वे लिखना नहीं जानते थे। इतिहास लिखने में उनकी रूचि नहीं थी। प्राचीन भारतीयों में कालगणना का कोई विचार नहीं था। आर्य लोग बाहर से आये और यहाँ के कूल निवासियों (द्रविड़) लोगों को जीतकर यहाँ बस गये। सिन्धु घाटी की सभ्यता (हड़प्पा आदि) को आर्यों ने बाहर से आकर नष्ट किया। मानव जाति का इतिहास लगभग ५००० वर्ष पुराना है। आदमी का पूर्वज बन्दर व चिंपांजी हैं आदि।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि ऊपर की सभी बातें अवैज्ञानिक, असत्य व कोरा दुष्प्रचार है। यह बात आज जग जाहिर हो चुकी है कि विदेशी विद्वान मैक्समूलर, विलमसन, मैकडोनल, रूडोल्फ वेबर, ग्रिफिथ, विन्टरनिट्ज, मोनियर विलियम्स आदि सभी का मुख्य उद्देश्य एक ही था, जो मैक्सूलर ने अपनी पत्नी को १८६६ में लिखे पत्र में स्पष्ट किया था कि **मेरा यह वेदों का संस्करण तथा मेरा वेदभाष्य उत्तरकाल में भारत के भाग्य पर भारी प्रभाव डालेगा। यह उनेक धर्म ग्रन्थ हैं** और मैं निश्चयर्पूवक कह सकता हूँ कि 'मेरा कार्य उनकी (भारतीयों) दीर्घकालीन आस्तिक भावना को निर्मूल कर देगा।'' अध्यापक गोल्डस्टुकर ने तो इस रहस्य का उद्घाटन किया था कि राथ, बेवर, विहटलिंग, आदि विद्वान् लेखक किसी रहस्यपूर्ण कारण से इस बात के लिए दृढ़ संकल्प है कि जैसे भी संभव हो भारत का गौरव नष्ट किया जाय।''

गतवर्ष (जुलाई २००७) तीन वरिष्ठ लेखकों–श्री कृष्ण, रामास्वामी एण्टोनिओ द निकोल्स एवं अदिति बनर्जी द्वारा सम्पादित एक अंग्रेजी पुस्तक **''इनवेडिंग दि सैक्रेड–एन एननैसिस ऑफ हिन्दुज्म स्टडीज इन अमेरिका''** मुम्बई में विमोचित की गयी। यह पुस्तक कई वर्षों के शोध का परिणाम बतायी गई है। इसें कहा गया है। **''भारत के मुकाबले अमेरिका के बुद्धिजीतियों में धर्म सम्बन्धी एक महत्वपूर्ण विद्या है तथा सैकड़ों शोधकर्त्ता हिन्दू तथा दूसरे भारतीय धर्मो पर काम करते हैं। उनमें से अधिकतर स्कालर भारतीय धर्म व संस्कृति के बारे में जान-बूझकर झूठी व्याख्या व गलत अनुवाद करके भ्रम व दुराग्रह फैलाने में लगातर व्यस्त है। उनकी सोच पुरानी सामंतवादी व मिशनरी दृष्टिकोण से प्रभावित हैं उनका तथाकथित शोध कुछ शक्तिशाली समुह (कारटल) द्वारा चालित पक्षपातपूर्ण, भ्रामक तथा अविश्वसनीय है।''**

हमें यह जानकर आश्चर्य ही होगा कि **मैकाले को एक भी भारतीय भाषा का ज्ञान न था, परन्तु उसके सम्पूर्ण भारतीय बुद्धिमता का ज्ञान न था, परन्तु उसने सम्पूर्ण भारतीय बुद्धिमता का उपहास किया, जेम्स मिल ने कभी भी भारत की यात्रा न की पर उसने भारत कर इतिहास लिखा। मैक्समूलर, विन्टरनिट्स, ग्रिफिथ आदि भारतीय धर्म व संस्कृति पर लिखने वाले किसी भी विदेशी विद्वान् को वैदिक व्याकरण, निरूक्त, छन्द, ज्योतिष का ज्ञान न था पर उन सब ने वेदों व वैदिक ग्रन्थों का नअुवाद किया और स्वयं सिद्ध प्रतिष्ठित व्याख्याकारों की हैसियत भी ले ली।**

वैदिक परम्परा की कालगणना के अनुसार सृष्टि का समय ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष है और संकल्प मन्त्र **''ओ३म् तत्सत अद्य ब्रह्मणों द्वितीय प्रहरार्द्धे श्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वनतरे अष्टाविंशतितमैं कलियुगे कलिप्रधमचरणे.... गताब्दे''** की गणना से भारतीयों **ने सृष्टि रचना (मनुष्योत्पति काल) से लेकर** आज तक काल की तथा इतिहास की धारा को अक्षुण्ण रखा है। मनुष्य उत्पत्ति काल को अभी तक १ अरब ६७ करोड़, २६ लाख, ४६ हजार, ११४ वर्ष हो चुके हैं। कुछ वैदिक विद्वानों का यह भी मानना है कि मनुष्यों की उत्पत्ति सातवें मन्वन्तर वैवस्वत मनु से हुई। उसके पूर्व के मन्वन्तरों में सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, पृथ्वी, समुद्र, वनस्पति, पशु आदि पैदा हुए। अगर हम वैवस्वत मनु से ही मनुष्य उत्पत्ति का काल लें तो भी आज तक १२ करोड़, ५ लाख, ३३ हजार, १०८ वर्ष हो गये। इससे इतना तो तय ही है

कि मनुष्यों का इतिहास बहुत लम्बा है।

भारतीय शुरू से ही लिखना जानते थे। ऋग्वेद में वाणी के दो रूप बताये गये हैं– एक दृश्य और दूसरा श्रव्य। दृश्य का अर्थ लिखा हुआ रूप है और श्रव्य का अर्थ ध्वनि (मौखिक) है। भारत में लिपि का प्रचलन अति प्राचीन काल से रहा है। प्रकृति प्रदेश भोजपत्र व ताड़पत्र धरती पर आदमी के आने से पहले ही प्रचुर मात्रा में मौजूद थे। जैसे कागज स्थायी नहीं, ऐसे ही भोजपत्र व ताड़पत्र भी स्थायी न थे। मौसमी कारणों से खराब होने पर पुस्तकों की प्रतिलिपि तैयार की जाती थी। अन्यथा भारत में अत्यनत प्राचीन ग्रन्थ आज कैसे मिलते? वेद–शास्त्र–ज्योतिष ग्रन्थों और बड़े–बड़े काव्यों को कैसे याद रखा जा सकता था? हाँ कुछ लोग अवश्य थे जो एक या अधिक वेदों को कण्ठस्थ करने में गर्व अनुभव करते थे। अगर यह कहा जाये कि उस समय सबकी बुद्धि इतनी प्रखर तथा स्मरण शक्ति आज के मुकाबले में कई गुणा अधिक थे। तब तो यह बात भी डार्विन के विकासवाद के विरूद्ध जाती है। सच्चाई यही है कि भारतीय लिखना जानते थे और बहुत लिखते थे। विश्व के किसी भी देश में इतना विशाल साहित्य भण्डार नीं इससे बड़ा लिखना जाने का प्रमाण और क्या हो सकता है?

डार्विन के विकासवाद सिद्धान्त की अव्यावहारिकता व अवैज्ञानिकता को अब तो कुछ विदेशी विद्वान् भी मानने लगे हैं अपनी धार्मिक आस्था के कारण जहाँ पहले कुछ पश्चिमी वैज्ञानिक पृथ्वी की आयु लगभग ६००० वर्ष मानते थे आज से ही लोग पृथ्वी की उम्र ३.६६ से ४.३ अरब वर्ष पूर्व की मानने लगे है। जब पृथ्वी इतनी पुरानी है तो आदमी इतने लम्बे अन्तराल के बाद क्यों आया, इसका उत्तर कठिन हैं अमेरिकन विद्वान् श्री ''माणकलक्रमी'' तथा ''डीवोलूशन ऑफ मॉन'' ने यह सिद्ध किया है कि डार्विन के सिद्धान्त में कोई तथ्य नहीं है तथा आदमी इस धरती पर लगभग २ अरब वर्ष पूर्व आया। क्रीमों तथा उनके सहयोगी लेखक रिचार्ड थामसन ने बहुत से पुरातात्विक उदाहरण दिये है जो निस्सन्देह यह सिद्ध करते है कि **बहुत बार वैज्ञानिकों को ऐसे तथ्य मिले हैं जो आज इतिहास, भाषा, विज्ञान में फैलाये गये काफी दुराग्रहों की पोल खोलते हैं। वैज्ञानिक पत्र-पत्रिकाओं ने इन खोजों को प्रकाशित भी किया पर ''डार्विन के विकासवाद'' तथा ५००० वर्षो की 'मानवजाति की मर्यादा' के लगाये गये चश्मों ने इनको ज्यादा महत्त्व नहीं दिया।** ये तथ्य सिद्ध करते है कि मानव जाति का इतिहास करोड़ों वर्ष पूर्व का है।

आस्था में अज्ञानता

श्रीराम व रामायण को ऐतिहासिक असत्य व कल्पना की उड़ान बताने वाले विदेशी तथा उनके देशी उच्छिष्ट भोजी जितने जिम्मेदार हैं, उससे कम जिम्मेदार हमारे अपने ही रामचरित्र पर लिखने वलो कवि तथा दूसरे विद्वान् भी नहीं हैं रही सी कसर आज 'रामकथा' करने वाले 'रामलीला' करने करवाने वाले लोगों ने पूरी कर दी। सच्ची आस्था को न जानकर ईश्वर के स्वरूप से अनभिज्ञ हम लोगों ने श्रीराम को ईश्वर व भगवान् का अवतार बना दिया। वहीं पञ्चतन्त्र की कहानियों की तरह हमने वेदों के विद्वान् व्याकरणाचार्य 'बुद्धिमतां वरिष्ठम्' हनुमान को बन्दर बना दिया, रामसेतु बनाने इंजीनियर जामवन्त को भालू/रीछ मान लिया, प्रसिद्ध सर्जन वैद्य सुषेण और अंगद बालि आदि को भी बन्दर बना दिया। सीता के अपहरण के बाद आकाश में रावण से लड़ाई करने वाले गृधकूट के भूतपूर्व राजा जटायु को सिद्ध पक्षी बना दिया। अधिक गलत बात तो यह है कि उस जमाने को सबसे सुन्दर व मन्त्रवित् विदुषी नारी 'तारा' का विवाह एक वान (बन्दर) बालि से करा दिया। माता सीता को जमीन से पैदा होन वाली और अन्त में जमीन में समाने वाली बना दिया और न जाने कहाँ–कहाँ तक हमारी कल्पना की असम्भव उड़ान चलती रही। बाल्मीकि ने तो राम को मनुष्य ही माना और उन्हें एक श्रेष्ठ पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम जानकर अपने ही समय में (समकालीन होते हुए) राम कथा लिखी थी। राम में मनुष्योचित भावनाएँ भी दर्शायी थी। उपन्यास की तरह कल्पितमात्र बनाकर तथा रामायण के मनुष्य पात्रों को पशु–पक्षी बताकर हमने श्रीराम व रामायण की ऐतिहासिकात पर प्रश्न चिह्न लगा दिये। हम तो यहाँ पर भी नहीं रुके। हमने तो श्रीराम को कलंकित करने के लिए कुछ कथाएँ भी गढ़ लीं। राम ने कभी भी सीता का परित्याग कर उसे गर्भवती अवस्था में वन में नहीं भेजा और न वाल्मीकि ने ऐसा लिखा। हमने तो तपस्या करते हुए ऋषि शम्बूक का वध भी राम से करा दिया और शम्बूक को शूद्र बताया किन्तु वाल्मीकि ने ऐसा कहीं भी नहीं लिखा। (**शेष अगले अंक में**)

Symbol of Divine Trust

✍ Monica Sangwan

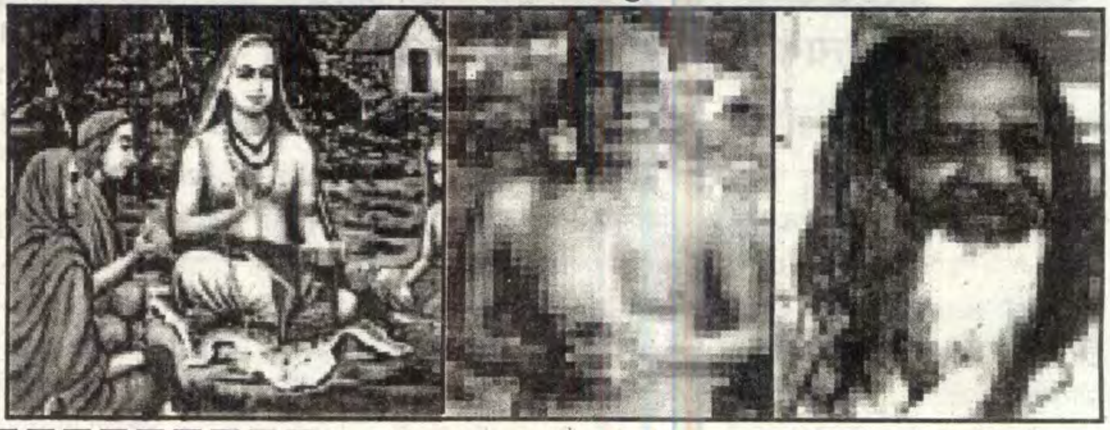

Ashada masa of Hindi calendar marks the beginning of monsoon in India. In the spiritual field this corresponds to the purifying shower of divine grace. The history of the day holds the Legend. It was Adi Shankaracharya who re-established Guru Shishya Parampara in 9th century.

In Hinduism the Guru, the spiritual mentor ranks in stature second to God. In fact in many traditions Guru is valued even more than God. It is the Guru who introduces a common and ordinary man to God.

Guru is a human form through which the power and grace of divine can manifest. The one divine teacher, called Ishwara who speaks through innumerable human Gurus. The intensity of devotion many Hindus feel towards their Guru is extraordinary and considered him as a face next to God with special powers earned through saadhna (Meditation). In the Hindu tradition Gurus don't just transfer information they also awaken the students' intuitive powers for them to find answers. The Gurus like, Adi Shankaracharya, Swami Vivekananda, Ramakrishna Paramhansa, Swami Sivananda, Dayananda Saraswati, Tadatatmananda are acknowledged pan globe even after they are not physically present because of their teachings. However, Gurus like Sri Sri Ravishankar, Baba Ramdev who are still present to enlighten the lives of people.

Guru means Teacher. The letter 'gu' stands for darkness and 'ru' stands for that which removes darkness. 'Guru' implies one who removes darkness of ignorance. The Guru has a commitment to continue teaching till the students gain knowledge.

Teachers of spiritual divinity are Gurus; Shishya is from the root 'sas' instruct or discipline. One who has desire for knowledge is jijnasu. The shishya should have shradhha (Trust) and bhakti (Devotion) towards the teacher and, also have the will to give everything, even though, Guru does not want.

In India, Guru Shishya Parampara has been followed from ancient and Either Abdu Rabb edic times. The beginning of oral traditions of Upanishads (c.2000 BCE), upa means near and ni means down and shad means to sit.

India has been following Guru Shishya Parampara since Vedic times. This legacy is spreading all around the globe by several Gurus (Spiritual Teachers) and their Shishyas (Devotees) in modern times.

So it means sitting down near a spiritual teacher to receive instruction. The best example of Guru Shishya Parampara can be seen in Bhagwat-Gita where Shree Krishna advises Arjuna to perform his duty honestly.

Adi Shankaracharya

Shankara was born in the year 805 AD. He was raised under the loving care of his mother. From his childhood he turned out to be a prodigy. When he was only one year old he learnt Sanskrit. When he was five years old he was sent to nearby Gurukula.

After completing his education at the Gurukula, Shankara returned home. Here he was serving his mother who was ill and also teaching some pupils. Shankara wanted to take up sanyasa but his mother was unwilling to let her only son take up sanyasa. Since the purpose of Shankara's life was much greater than taking care of his mother, a miracle happened.

When Shankara was taking bath in the Purna River, a crocodile caught hold of his leg and started to drag him into the river.

Shankara felt that his life would soon come to an e soon come to an end. He loudly called out to his mother. Aryaamba rushed to the scene. Since, every Hindu is supposed to enter the phase of Sanyasa before his or her death; Shankara requested the permission of his mother to become a Sanyasin. Seeing her son's plight, Aryaamba gave her consent. The crocodile let go of his leg and swam away.

He established Maths in four places :

- Vimala Pitha at Puri with which Aranyas and Vanas are associated with the mantra 'prajnanambrahman'.
- Kalika Pitha in Dwarika, associated with Tirthas and Ashramas, with the mantra 'tattvamasi.'
- Sarada Pitha in Sringeri, associated with Bharatis, Puris and Sarasvatis with the mantra 'ahambrahmaasmi.'
- Jyoti Math in Badrinath associated with Giri, Parvata and Sagara and the mantra 'ayamatman brahman.'

Shankara founded the dasanami order of sanyasis. It is divided into ten groups namely Aranya, Ashrama, Bharati, Giri, Parvata, Puri, Sarasvati, Sagara, Tirtha and Vana. He became one with the Linga in his thirty-second year in 820 A.D.

Swami Chinmayananda

Swami Chinmayananda was born as Balakrishna Menon on 8, May 1916 in Ernakulam, Kerala. He was a Hindu spiritual leader and teacher who inspired the formation of Chinmaya Mission, a world-wide nonprofit organisation, to spread the knowledge of Advaita Vedanta, the non dual system of thought found in the Upanishads, which epitomize the philosophical teachings of the Vedas.

Swami Chinmayananda is renowned for teaching Bhagavad-Gita the Upanishads, and other ancient Hindu scriptures in a logical and scientific manner. From 1951 onward, he spearheaded a global Hindu spiritual and cultural renaissance that popularised the religion's esoteric scriptural texts, teaching them in English all across India and abroad. His wit and erudition made him a dynamic orator, captivating crowds of up to several thousand in free discourses twice a day for nearly 40 years.

Swami Chinmayananda inspired the formation of Chinmaya Mission in 1953. Founded by his disciples and led by him, Chinmaya Mission is a spiritual, educational, and charitable nonprofit organisation that encompasses more than 300 centers in India and internationally. Mission is administered by the apex body of Central Chinmaya Mission Trust, in Mumbai, India, now under the leadership of Swami Chinmayananda's successor, Swami Tejomayananda, the present head of Chinmaya Mission worldwide.

Swami Chinmayananda authored 95 publications in his lifetime, including commentaries on the major Upanishads and Bhagavad-Gita. He served several American and Asian universities as a visiting professor of Indian philosophy and conducted university lecture tours in many countries. Through his Vedantic teachings, publications, centers, ashrams, temples, and social service projects around the globe, his work continues to provide cultural and spiritual instruction to members of the Hindu diaspora. He died on August 3, 1993 which his followers mark as the occasion when he attained Mahasamadhi.

Swami Vidyananda

Born in a pious and religious family in Kerala in the year 1914, he was known as Ramanathan, the second son of a big family consisting of 2 sons and five daughters. The influence of the mother over the boy was very profound in creating spiritual Samskaras in him. At the age of eight, his

coitnued on page no. 10

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

इंचियोन, एशियन गेम्स में भारतीय खिलाडियों को शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई : हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्र प्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके इंचियोन, एशियन गेम्स २०१४ के पदक विजेताओं को कोटि–कोटि बधाई दी है। गौरतलब है कि लंदन ओलम्पिक में ब्रॉन्ज मेडल जीत चुके भारत के योगेश्वर दत्त ने रविवार को १७वें एशियाई खेलों की कुश्ती स्पर्धा के ६५ किलोग्राम वर्ग में गोल्ड जीता। योगेश्वर ने डोवोन जिम्नेजियम में हुए फाइनल में ताजिकिस्तान के जालिमखान युसुपोव को ३–० से पराजित किया। इसके साथ भारत के पदकों की संख्या अब तक ३५ हो चुकी है, जिसमें ४ गोल्ड, ५ ब्रॉन्ज और २६ सिल्वर पदक शामिल हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कौशिक एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री शर्मा ने देश में खेलों के विकास के लिए केंद्र एवं राज्य सरकारों से विशेष ध्यान देने का आह्वान किया। राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने खिलाड़ियों को बधाई देने के साथ इस बात की ओर भी ध्यान देने पर बल दिया कि सवा सौ करोड़ की आबादी वाले देश में अभी भी कुशल खिलाडियों की संख्या काफी कम है, जिसके कारण अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर, पदक तालिका में हम काफी पीछे रह जाते हैं। एशियन गेम्स में भी पदक तालिका में हमारा स्थान नौवां है। सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाओं को खेलों के विकास के लिए सतत् प्रयास करना चाहिए। हिन्दू महासभा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता देशी खेलों की प्रगति पर भी चिंतित दिखे।

conitnued from page no. 9 **Symbol of Divine Trust.....**

mother took both her sons on a long pilgrimage for three years, all over India, during which period the young boy had the opportunity of receiving the blessings of many Siddha-purushas and holy saints. After an unsuccessful business-career, he went to Chidambaram, in Tamilnadu, where he came in contact with his music Guru, Sri P. Srinivasa Iyer, who was himself a Naishthika Brahmachari and a saintly soul. He taught him Veena for 12 days after which he asked him to practice on his own, but the Guru's power and grace was such that he soon not only mastered the subtle art but also could connect music with Vedantic thoughts. In order to help his student support his large family, Sri Srinivas Iyer put him in the Cinema field, in which Sri Ramanathan worked for nearly 25 years, in Bombay and Madras. Sivananda asked him to stay here permanently and said that he had been praying to Goddess Saraswati to send a person who could play on the Veena.

However, he had to go back to Madras to complete his contracts and other pending works, and joined the Sivananda Ashram in 1956. On the holy Guru Purnima of the same year, Sivananda gave him Sanyasa and named him Swami Vidyananda. His feelingful Bhajans and mastery in Veena have endeared him to countless visitors, who make an annual visit to the Ashram, primarily to recharge themselves with the divine vibrations in his Bhajan-class. His Bhajans are a treat to the souls and many are the foreign students who were enchanted by his soulful songs that wished to take him to their countries. It is not unusual to see him go into a trance while singing Bhajans and Kirtans.

Mahaeishi Mahesh Yogi

Maharishi Mahesh Yogi was born on January 12, 1918 in Jabalpur, Madhya Pradesh as Mahesh Prasad Varma and obtained the honorific Maharishi (meaning "Great Seer") and Yogi as an adult. He developed the Transcendental Meditation technique and was the leader and guru of aworldwide organization that has been characterized in multiple ways including as a new religious movement and as non-religious.

Maharishi Mahesh Yogi became a disciple and assistant of Swami Brahmananda Saraswati, the Shankaracharya (spiritual leader) of Jyotirmath in the Indian Himalayas. The Maharishi credits Brahmananda Saraswati with inspiring his teachings. In 1955, the Maharishi began to introduce his Transcendental Deep Meditation (later renamed Transcendental Meditation) to India and the world. His first global tour began in 1958. His devotees referred to him as His Holiness, and because he often laughed in TV interviews he was sometimes referred to as the "giggling guru".

In the late 1960s and early 1970s, the Maharishi achieved fame as the guru to the Beatles, The Beach Boys and other celebrities. He started the TM-Sidhi programme, in the late 1970s that claimed to offer practitioners the ability to levitate and to create world peace. The Maharishi's Natural was founded in 1992, and ran campaigns in dozens of countries. In 2008, the Maharishi announced his retirement from all administrative activities and went into silence until his death three weeks later. Maharishi died on February 5, 2008 in Vlodrop, Netherlands.

क्या आप जानते हैं?

1. सर्वोच्च न्यायालय भारतीय न्याय व्यवस्था का मुकुट है।
2. देश में अभी ८.२ करोड़ ट्वीटर एकाउन्ट हैं।
3. क्षमादान करने का अधिकार राष्ट्रपति या राज्यपाल को ही है।
4. भारत में कुल १४ करोड़ ६ लाख टन दूध का उत्पादन होता है।
5. देश में हर साल करीब १,४,००० सड़क दुर्घटनायें होती हैं।
6. विश्व में अभी तक ५० लाख अंगदाता हुए हैं।
7. तमिलनाडु की मुख्यमंत्री के पास ६६ करोड़ की सम्पत्ति है।
8. राजनीति आज पद और पैसा पाने का सहज सरल धंधा है।
9. देश में १४ हजार ८४२ वीआईपी की सुरक्षा में ४७ हजार ४४७ पुलिस वाले लगे हैं।
10. देश में ७६१ नागरिकों पर एक पुलिस वाला तैनात है।
11. हिन्दू धर्म में सिर्फ १६ संस्कार हैं। जिनका अर्थ शुद्धिकरण है।
12. उ. प्र० के ४२ हजार से ज्यादा परिषदीय स्कूलों में पढ़ाई लिखाई का जिम्मा सिर्फ एक–एक शिक्षकों के हवाले है।
13. देश में ४६ लाख रजिस्टर्ड वक्फ संपत्तियाँ हैं जिनकी मौजूदा आमदनी करीब १६३ करोड़ रुपये है।
14. भारत के २८.७ करोड़ व्यस्क पढ़ना लिखना भी नहीं जानते जो दुनिया भर की निरक्षर आबादी का ३७ फीसदी है।
15. देश में ७० फीसदी लोग गरीब हैं।
16. लोकसभा चुनाव में खर्च की सीमा केवल ४० लाख है पर व्यवहार में इसके तहत करोड़ों रुपये खर्च करना आम बात है। जिसके अन्तर्गत कई उम्मीदवार १०० करोड़ रुपये तक खर्च करते हैं।
17. ५ साल में मैडिकल कोर्स में निजी मैडिकल कालिजों में एक छात्र पर ४०–४५ लाख का खर्च आता है।
18. दुनिया में सवाईकल पित्ताशय और गले के कैंसर के सबसे ज्यादा मामले भारत में हैं।
19. जीवन प्रकृति प्रदत्त है जिसका मौलिक अधिकार महत्वपूर्ण है।
20. न्याय में देरी अन्याय का प्रतीक है।
21. उच्चतम न्यायालय मौलिक अधिकारों का संरक्षक है।
22. २०१२ में देशभर में बलात्कार के करीब २५ हजार घटनाओं में से ३,४२५ अकेले म०प्र० में हुई हैं।
23. भारत में राजनीतिक भ्रष्टाचार बढ़ गया है।
24. हर अज्ञात शव के अन्तिम शव के लिए पुलिस कर्मियों को १५०० रुपये दिये जाते हैं।
25. लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम के अनुभाग १२३ (६) के तहत चुनाव खर्च की अधिकतम सीमा से ज्यादा खर्च करना अवैध है। साभार दी मॉरल

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का
पाकिस्तान ने २६ भारतीय मछुआरों.....

बहरहाल, इस साल मई में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में हिस्सा लेने के लिए पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ की भारत यात्रा से पहले पाकिस्तान ने १५१ भारतीय मछुआरों को रिहा किया था। अखिल भारत हिन्दू महासभा ने भारतीय मछुआरों की गिरफ्तारी का कड़ा विरोध किया है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महामंत्री मुन्ना कुमार शर्मा, एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र सरकार से मांग की है कि पाकिस्तान के इस दुस्साहस का जवाब दिया जाये।

शेष पृष्ठ 6 का
एक ग्रंथ जिसने भारत-पाक को.....

आज अपेक्षित है। १९४७ से आज तक संघर्ष व विरोधाभासों के बीच अंग्रेजों की कुटिलता से जन्मा पाकिस्तान आज भी दक्षिण पूर्वी एशिया के तापमान का बैरोमीटर है और शायद इस पीढ़ी में इस जटिल समस्या का हल संभव न होगा, यह लेखक भी मानता है। इसके साथ ही वह स्वयं कश्मीर पर उसका एक मौलिक व दिशा निर्देशक अभिलेख मानता है सेन्टाक्रूज स्थित केलीफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रो. दिलीप के. बसु के अनुसार समीक्षित ग्रंथ विस्मयजनक रूप से पिछले छह दशकों से अधिक के समय का पारदर्शिता पूर्वक सम्यक अध्ययन प्रस्तुत करता जिसको आज के विश्व का कोई नेता व बुद्धिजीवी उपेक्षित नहीं कर सकता है। केलीफोर्निया विश्वविद्यालय (लाख एजेलिस) के इतिहास विभाग के एमेरिटस प्रोफेसर स्टेनली वोल्पर्ट की अब तक की दर्जन भर से अधिक पुस्तकों में कुछ के अब तक ८ से १० संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं क्योंकि अपने विषय के वे सन्दर्भ ग्रंथ भी माने जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

हिन्दू सभावार्ता का सदस्यता शुल्क बढ़ाने का निर्णय दिनांक 06 - 09 - 2014 को राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक में लिया गया। संशोधित शुल्क निम्न प्रकार है।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक...150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य...1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 5 का
गाय के दूध, घी का औषधि.....

❖ आज खाने में घी ना लेना एक फैशन बन गया है। बच्चे के जन्म के बाद डाक्टर्स भी घी खाने में मना करते हैं। दिल के मरीजों को भी घी से दूर रहने की सलाह दी जाती है। ये गौ माता के खिलाफ एक खतरनाक साजिश है। रोजाना कम से कम दो चम्मच गाय का घी तो खाना ही चाहिए। यह वात और पित्त दोषों को शांत करता है।

❖ चरक संहिता में कहा गया है कि जठराग्नि को जब घी डालकर प्रदीप्त कर दिया जाए तो कितना ही भारी भोजन क्यों न खाया जाए, ये बुझती नहीं।

❖ बच्चे के जन्म के बाद वात बढ़ जाता है, जो घी के सेवन से निकल जाता है। अगर ये नहीं निकला तो मोटापा बढ़ जाता है।

❖ हार्ट की नलियों में जब ब्लोकेज हो तो घी एक ल्यूब्रिकेंट का काम करता है।

❖ कब्ज को हटाने के लिए भी घी मददगार है। गर्मियों में जब पित्त बढ़ जाता है तो घी उसे शांत करता है।

❖ घी सप्तधातुओं को पुष्ट करता है।

❖ दाल में घी डालकर खाने से गैर नहीं बनती।

❖ घी खाने से मोटापा कम होता है।

❖ घी एंटी ऑक्सीडेंट्स की मदद करता है, जो फ्री रेडिकल्स को नुकसान पहुँचाने से रोकता है।

❖ वनस्पति घी कभी न खाएं। ये पित्त बढ़ाता है और शरीर में जम के बैठता है।

❖ घी को कभी भी मलाई गर्म करके ना बनाएं। इसे दही जमाकर मथने से इसमें प्राण शक्ति आकर्षित होती है। फिर इसको गर्म करने से घी मिलता है। इसे बनाते वक्त अगर भगवान का भजन और स्मरण किया जाए तो इसकी खुशबू और स्वाद ही अनोखा होगा।

देशी गाय के दूध के वैज्ञानिक लाभ।

❖ देशी गाय के दूध में कैल्शियम प्रचुर मात्रा में होती है, यह हड्डियों का विकास करता है और साथ ही कैंसर को रोकने में भी लाभदायक है।

❖ देशी गाय के दूध में ८ प्रतिशत प्रोटीन, ८ प्रतिशत कार्बोहाईड्रेट ०.७ प्रतिशत खनिज व विटामिन ए. बी. सी., डी. व ई प्रचुर मात्रा में होते हैं, जो बच्चों व गर्भवती महिलाओं के लिए अति आवश्यक हैं।

❖ देशी गाय के दूध में कैरोसीट नामक तत्व होता है, जो नेत्र ज्योति को बढ़ाता है।

❖ देशी गाय का दूध आसानी से पच जाता है और टॉनिक के रूप में मस्तिष्क की प्रत्येक नस, नाड़ी तक पहुँचकर स्मरण शक्ति को बढ़ाता है।

❖ देशी गाय के दूध में बहुत से ऐसे गुण हैं, जो मनुष्य को स्फूर्तिवान, बुद्धिमान एवं निरोगी बनाते हैं।

❖ देशी गाय के दूध में कैलारी ६५ प्रतिशत, प्रोटीन ३.३ प्रतिशत, वसा ४.१ प्रतिशत होती है, जो कि माँ के दूध से लगभग समकक्ष है।

गाय के दूध की महिमा : गाय का दूध जितना सात्विक होता है उतना सात्विक दूध किसी का भी नहीं होता। हमारे देश की गायें सौम्य और सात्विक होती हैं, इसीलिए उनका दूध भी सात्विक होता, जिसको पीने से बुद्धि तीक्ष्ण होती है और स्वभावं सौम्य शान्त होता है। विदेशी गायों का दूध तो ज्यादा होता है, पर उनके दूध में उतनी सात्विकता नहीं होती तथा उनमें गुस्सा भी ज्यादा होता है।

शेष पृष्ठ 5 का
कलियुग के दास.....

मूल्य नहीं, ऐसे जीवन मे आत्मबल कैसे हो सकता है? आत्मबल ही तो विकसित जीवन है। विलासिता का जीवन तो निर्बल का जीवन है। मनुष्य इन्द्रियों का दास ही बनकर रह गया है। मनुष्य तो पुरुष से परम पुरुष तथा मानव से महामानव बनने की योग्यता लेकर पैदा हुआ है। इस योग्ता को तभी प्रकट कर पायेगा जब संघर्ष से निकल कर अपने आप को तपायेगा। इन्द्रियों और मन की दासता को त्यागकर आत्मबल बढ़ायेगा। भगवान भी उन्हीं का साथ देते हैं जो अपने संघर्ष द्वारा अपनी सहायता स्वयं करते हैं। निठल्ले और नपुंसकों के साथ भगवान कभी भी नहीं खड़े होते। उन्हें कर्मठता, त्याग, और दृढ़ निश्चय जैसे गुण पसन्द आते हैं। तमोगुण उन्हें नहीं भाता।

दिनांक 15 अक्टूबर से 21 अक्टूबर 2014 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
अहोई अष्टमी	16 अक्टूबर	वीरवार
रमा एकादशी	19 अक्टूबर	रविवार
आजाद हिन्द फौज स्थापना दिवस	20 अक्टूबर	सोमवार
धनतेरस	21 अक्टूबर	मंगलवार

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

चर्च बना मंदिर, साठ ईसाई पुनः बने हिन्दू

गांव असरोई में २६ अगस्त को २० वर्ष पुराने चर्च ने मंदिर का रूप ले लिया। ईसाई बने आठ परिवारों के करीब ६० लोगों ने हवन–यज्ञ कर पुनः हिंदू धर्म अपना लिया। हाथरस जिला मुख्यालय के निकटवर्ती व अलीगढ़ जिले के इगलास थाना क्षेत्र के गांव असरोई में २० वर्ष पहले आठ हिन्दू परिवारों ने ईसाई धर्म अपना लिया था। ईसाई मिशनरियों ने प्रार्थना के लिए गांव में चर्च भी बनवा दिया। आरोप है कि मिशनरियों ने बीस साल में स्कूल, आदि का कोई वायदा पूरा नहीं किया तो इन्हें भूल का अहसास हुआ। इन लोगों में से कुछ ने खुद को छला हुआ महसूस करते हुए कुछ समय पूर्व संघ की धर्मजागरण समिति से संपर्क कर घर वापसी का अनुरोध किया। समिति सदस्य खेमचंद इन परिवारों से मिले तो सबने हिंदू धर्म में लौटने की इच्छा जतायी। इसके बाद परावर्तन का कार्यक्रम तय कर लिया गया। समिति के पश्चिमी उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय प्रमुख राजेश्वर सिंह ने बताया कि गांव असरोई के हिन्दू परिवारों को १९९५ में सेवेन डेज चर्च की मिशनरियों ने ईसाई बनाया था। उन्होंने आरोप लगाया कि यह चर्च पूरे देश में हिन्दुओं को ईसाई बनाने में जुटा हुआ है। आंध्र प्रदेश के एक पूर्व मुख्यमंत्री इसके सदस्य रहे हैं। यह चर्च हापुड़ से संचालित हो रहा था। राजेश्वर सिंह, ब्रज प्रांत के सह प्रमुख विपिन चन्द्र लाल, बजरंग दल के प्रांत सुरक्षा प्रमुख अभिषेक रंजन आर्य, अलीगढ़ व हाथरस के अन्य हिन्दू संगठनों से जुड़े लोग २६ अगस्त को दोपहर १२ बजे गांव के चर्च में पहुंचे। यहां जय श्रीराम के उद्घोष के बाद हवन–यज्ञ किया गया। सभी लोगों ने आहुति देते हुए वेद मंत्रोच्चार किया और इसी के साथ ६० लोगों की हिन्दू धर्म में वापसी हुई। इससे पहले सभी परिवारों ने आर्य समाज हाथरस के प्रतिनिधि को हिन्दू धर्म का सर्टिफिकेट देने के लिए शपथ–पत्र सौंप दिये थे।

डॉ० मदनगोपाल वाजपेयी

अस्तित्व बचाने के लिए संघर्षरत बांग्लादेशी हिन्दू

केन्द्रीय मंत्री प्रशान्त हरतालकर पिछले दिनों बांग्लादेश के प्रवास पर थे। प्रवास का मुख्य उद्देश्य–वहां हिन्दुओं की स्थिति का अध्ययन करना था। उनका कहना है कि हिन्दू समाज के समक्ष इस समय अस्तित्व का संकट है और जेहादियों द्वारा लगातार उनके मानवाधिकारों का उल्लघंन किया जा रहा है। लगातार हिन्दुओं की जनसंख्या घट रही है। प्रवास के दौरान वे ढाका स्थित रामा काली मंदिर के न्यासियों, इस्कॉन, ढाका एवं चटगांव, स्थित बौद्ध मठों, ढाका स्थित गुरुद्वारा, सिल्हट स्थित कालीबाड़ी मंदिर न्यास, ढाका स्थित गणेश मंदिर न्यास, चटगोंग स्थित शंकर मठ, चिटगांग स्थित अर्चक पुरोहित संघ तथा चार शक्तिपीठों के न्यासियों से मिले और हिन्दू समाज की स्थिति को लेकर चर्चा की। उनके साथ बांग्लादेश हिन्दुओं के प्रमुख नेता म. म. प्रियब्रत ब्रह्मचारी जी रहे।

साथ ही वे ढाका स्थित हिन्दू महाजोत, हिन्दू बौद्ध ईसाई एक्य परिषद्, वर्ल्ड हिन्दू फांउडेशन, बांग्लादेश मानवाधिकार आयोग के पदाधिकारियों, ढाका के महिला संगठन, रंगपुर के हिन्दू बालिका छात्रावास, सिल्हट, चिटगोंग तथा बोगरा सहित चार शक्तिपीठों, विष्णु पद स्थान, चैतन्य महाप्रभु स्थान आदि भी गये। यात्रा के बाद उनका मानना है कि बांग्लादेश में हिन्दू एक प्रकार से राज्य विहीन नागरिक हैं। राजनीतिक दृष्टि से उनका कोई वोटबैंक नहीं हैं, क्योंकि वे पूरे देश में बिखरे हुए हैं। मुसलमानों की अपेक्षा गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले हिन्दू अधिक है। हिन्दुओं में रोजगार भी कम है और शिक्षा का स्तर भी।

सरकार द्वारा जानबूझकर उन्हें नजरअंदाज किया जाता है। बलात्कार, अपहरण, हत्या, आतंकी हमले, मंदिरों का विध्वंस आदि रोजमर्रा की बातें हो गयी हैं। वहां हिन्दुओं का अस्तित्व ही संकट में है। मानवाधिकारों का सर्वाधिक उल्लंघन हो रहा हैं न भारत सरकार और न ही भारत अथवा विश्व के किसी अन्य हिन्दू संगठन का उन्हें सहयोग मिल रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में तो हिन्दुओं की स्थिति अत्यंत दयनीय है। लगातार उनके अंदर हीनभावना पैदा की जा रही है। बौद्ध और ईसाई भी अल्पमत में हैं लेकिन इस स्थिति में भी ईसाई मतान्तरण की गतिविधियों में लिप्त पाये जाते हैं। वहां हिन्दुओं की आबादी ६ से १० प्रतिशत, बौद्धों की १.५ प्रतिशत तथा ईसाइयों की ०.८ प्रतिशत है। हिन्दुओं द्वारा अपनी भावी संतानों के लिए कोई योजना नहीं है। सेवा गतिविधियां भी न के बराबर हैं। जातिगत भेद भी बहुत ज्यादा हैं।

कबिरा खड़ा बजार में

देख तमाशा कुर्सी का

कई तमाशों में कुर्सी का तमाशा सबसे बड़ा है। कुर्सी के तमाशें में किसी भी रिश्ते की कोई जगह नहीं है। बस लक्ष्य दिखता है। जैसे अर्जुन को चिड़िया की आंख दिखती थी, वैसे ही नेताओं को बस कुर्सी दिखती है। इसी कुर्सी ने रिश्तों के बीच कई बार तलवार चलाई है। इस बार भी चल गयी। भाजपा और शिव सेना के रिश्तों पर कुर्सी भारी पड़ गयी। महाराष्ट्र में ४८ साल पुरानी पार्टी शिवसेना और ३४ साल पुरानी भारतीय जनता पार्टी का २५ साल पुरानी दोस्ती टूट गयी। जब से केंद्र की सत्ता में नरेंद्र मोदी का पदार्पण हुआ और भाजपा की कमान अमित शाह को सौंपी गई, तभी से यह अनुमान लगाया जा रहा था कि महाराष्ट्र में महायुति की उल्टी गिनती शुरू हो गई है। १९८९ में पहली बार भाजपा नेता प्रमोद महाजन और शिवसेना के संस्थापक बाल ठाकरे के प्रयासों से ये गठबंधन स्थापित हुआ था। लेकिन दो वर्ष बाद ही दोनों पार्टियों में एक दूसरे की आलोचना का ऐसा दौर चला कि यह लगने लगा था अब ये कभी साथ नहीं होंगे। उस समय छगन भुजबल ने शिवसेना छोड़कर कांग्रेस का दामन थाम लिया था। तब भाजपा के नेता गोपीनाथ मुंडे ने विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के पद का दावा ठोंक दिया था और शिवसेना को ये काफी नागवार गुजरा था। कुछ ऐसे ही हालात साल २००५ में बने जब नारायण राणे ने शिवसेना छोड़ी थी। लोकसभा चुनावों के बाद शिवेसना को कम से कम छह मंत्री पद मिलने की उम्मीद थी। लेकिन मोदी मंत्रिमंडल में सिर्फ अनंत गीते को स्थान मिला और वह भी भारी उद्योग मंत्रालय में। इस बात को लेकर शिवसेना इतनी नाराज थी कि गीते ने दो दिनों तक अपना पद नहीं संभाला। नरेंद्र मोदी और अमित शाह को शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे की यह राजनीति नागवार गुजरी। तभी से मोदी और शाह सही वक्त का इंतजार कर रहे थे जब शिवसेना से नाता तोड़ा जाए। दरअसल अमित शाह को यह मंजूर नहीं कि महाराष्ट्र में बहुमत मिलने के बाद उद्धव ठाकरे मुख्यमंत्री बनें। जबकि उद्धव ठाकरे ने इस बात के साफ–साफ संकेत दे दिए कि अगर जनादेश मिला तो वो जिम्मेदारी निभाने से पीछे नहीं हटेंगे। कहते हैं कि शिवसेना–भाजपा का गठबंधन हमेशा ही बनावटी था। ऐसा माना जाता है कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को महाराष्ट्र की राजनीति में शिवसेना का वर्चस्व कभी रास नहीं आया। शिवसेना–भाजपा गठबंधन के शिल्पकार कहे जाने वाले दिवंगत भाजपा नेता प्रमोद महाजन शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे के दबाव के आगे न सिर्फ हमेशा झुकते आए, बल्कि ठाकरे की नाराजगी का डर दिखाकर अपनी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को भी हमेशा झुकाते रहे। जबकि संघ से करीबी रिश्ते रखने वाले नितिन गडकरी शिवसेना के इस रवैये के हमेशा विरोधी रहे। प्रमोद महाजन, गोपीनाथ मुंडे और बाल ठाकरे जैसे नेताओं ने इस गठबंधन को जैसे–तैसे जोड़े रखा था जो अब नहीं रहे। इन तीनों मराठा दिग्गजों का नहीं होना महाराष्ट्र की राजनीति के लिए तो नुकसानदेह रहा ही साथ ही भाजपा, शिवसेना और चार अन्य दलों से मिलकर बनी महायुति को भी टूटने के लिए मजबूर कर दिया। महायुति के टूटने का हश्र जो भी हो, लेकिन एक बात तय है कि अमित शाह के नेतृत्व वाली भाजपा महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे की शिवसेना से दूरियां बनाकर अपनी साख को बचाने की हरसंभव कोशिश करेगी। साथ ही मोदी का जादू चला तो विशुद्ध भाजपा की सरकार भी बनाने की कसर नहीं छोड़ेंगे जिसकी उम्मीद कम है।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2013-14-15
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 08 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2014 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।